बाल-पुराण

लेखक

परिडत रामजीलाल शर्म्मा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

बालसखा—पुस्तकमाला, संख्या २२

बाल-पुराण

अठारहों पुराणों की कथाओं का संक्षिप्त वर्णन

लेखक

पण्डित रामजीलाल शर्म्मा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

द्वितीय बार] सं० १९७६ वि० [मूल्य-आठ आने

पुस्तक-परिचय।

इंडियन प्रेस, प्रयाग से "बाल-सखा-पुस्तकमाला" की अब तक २१ पुस्तकें निकल चुकीं। यह "बाल-पुराण" बाईसवीं पुस्तक है।

'बाल-पुराण' में अठारहों पुराणों की क्षिप्त कथा-सूची दी गई है। हर एक पुराण की कथाओं के रखने से पुस्तक बहुत बढ़ जाती, इसी लिए हमने हर पुराण की कथाओं का, अध्यायानुसार, संक्षिप्त वर्णन देना ही उचित समझा। इससे पाठकों को यह मालूम हो जायगा कि किस किस पुराण में कितने अध्याय हैं, कितने श्लोक हैं और कौन कौन सी कथायें हैं। संक्षिप्त कथाओं की सूची लिखने के साथ ही हमने अध्यायों की संख्या भी दे दी है। आशा है, पाठक इस पुस्तक से पुराणों के विषय में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। यदि, इस 'माला' की अन्य पुस्तकों की तरह इस 'बाल-पुराण' को भी पाठकों ने पढ़कर पसन्द किया और इससे पाठकों को कुछ भी लाभ हुआ, तो मैं समझूँगा कि मेरा काम सफल हुआ।

अभी इस 'पुस्तक-माला' के लिए और भी कितनी ही उपयोगी पुस्तकें लिखने का विचार है। आशा है, पाठक इस 'माला' की पुस्तकों का अधिक प्रचार कर हमारा और प्रकाशक महाशयों का उत्साह बढ़ा कर, हिन्दी-साहित्य की वृद्धि करने में सहायता देंगे।

विनीत,

८। ६। ०८

रामजीलाल।

विषय-सूची ।

बौद्ध-पुराण

हमारे यहाँ संस्कृत में अठारह पुराण प्रसिद्ध हैं । उनमें सैकड़ों नहीं हज़ारों कथायें हैं । उनके नाम ये हैं;—

१ ब्रह्मपुराण

२ पद्मपुराण

३ विष्णुपुराण

४ शिवपुराण (या वायुपुराण)

५ श्रीमद्भागवत (या देवीभागवत)

६ नारदपुराण

७ मार्कण्डेयपुराण

८ आग्नेयपुराण

९ भविष्यपुराण

१० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण

११ लिंगपुराण

१२ वाराहपुराण

१३ स्कन्दपुराण

१४ वामनपुराण

१५ कूर्मपुराण

१६ मत्स्यपुराण

१७ गरुड़पुराण

१८ ब्रह्माण्डपुराण

१—ब्रह्मपुराण

अब हम क्रम से एक एक पुराण का वर्णन करते हैं। सबसे पहले 'ब्रह्मपुराण' है। इसमें कुल २४३ अध्याय हैं। ठीक ठीक पता नहीं लगता कि इसमें कुल श्लोक कितने हैं। शिवपुराण में लिखा है कि ब्रह्मपुराण में कुल श्लोक-संख्या १०,००० है। और, देवीभागवत, श्रीमद्भागवत, नारदपुराण और ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण में भी इसकी श्लोक-संख्या दस हज़ार ही लिखी है। परन्तु मत्स्यपुराण की राय इनके विरुद्ध है। उसमें ब्रह्मपुराण के श्लोकों की संख्या १३,००० बतलाई गई है। अर्थात् औरों से ३ हज़ार ज़्यादा !

ब्रह्मपुराण दो भागों में बाँटा गया है। पहले भाग में देव, असुर, प्रजापति और दक्ष आदि की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। फिर भगवान् सूर्य के वंश की कथा कही गई है। उसी में भगवान् रामचन्द्रजी की कथा विस्तारपूर्वक लिखी गई है। सूर्यवंशी राजाओं की कथा कहने के बाद पीछे चन्द्रवंशी राजाओं का भी हाल लिखा गया है। उसी में भगवान् श्रीकृष्ण-चन्द्रजी का चरित्र लिखा गया है। उसी में सब द्वीप द्वीपान्तर

समुद्र, वर्ष, पाताल और स्वर्ग का भी वर्णन खूब विस्तार से किया गया है। सब नरकों के नाम, सूर्य की प्रशंसा, पार्वती के जन्म और विवाह की कथा बड़ी मनोहरता से लिखी गई है। फिर दक्ष का और एकाम्रक्षेत्र का वर्णन किया गया है । बस, पूर्व भाग में इन्हीं कथाओं का वर्णन है।

दूसरे भाग में पहले तीर्थ-यात्रा के विषय में बड़े विस्तार से कथा लिखी गई है। फिर यमलोक का वर्णन करते हुए पितरों के लिए श्राद्ध की विधि लिखी गई है और सब वर्णों के अलग अलग धर्मों का वर्णन किया गया है। इस के पश्चात् वैष्णव धर्म, सत्ययुग आदि चारों युगों की कथा, प्रलय की कथा और ब्रह्म-सम्बन्धी अनेक विषयों की कथा इत्यादि अनेक कथायें लिखी गई हैं।

अध्याय-क्रम से कथा की सूची।

१—मङ्गलाचरण, नैमिषारण्य क्षेत्र का वर्णन, लोमहर्षण मुनि का पुराण-कथनारम्भ।

२—स्वायम्भुव मनु के साथ शतरूपा का व्याह, प्रियव्रत और उत्तानपाद की उत्पत्ति, दक्ष का जन्म, उत्तानपाद के वंश का वर्णन, राजा पृथु की कथा, प्रचेतागण की उत्पत्ति, दक्ष का जन्म और उसकी सृष्टि की कथा।

३—देव आदि की उत्पत्ति, हर्यश्व और शवलाश्व का जन्म, दक्ष द्वारा साठ कन्याओं की उत्पत्ति, उनकी सन्तान और मरुद्गणों की उत्पत्ति।

४—ब्रह्मा द्वारा देवताओं को अपने अपने देशों में राजतिलक करना, और राजा पृथु का चरित ।

५—मन्वन्तरों की कथा, महाप्रलय का वर्णन, छोटे प्रलय की कथा ।

६—सूर्यवंश का वर्णन, छाया और संज्ञा का चरित, यमुना आदि सूर्य की कन्याओं की कथा ।

७—वैवस्वत मनु का वंश, कुवलयाश्व का चरित, धुन्धुमार और उसके वंशधरों की कथा, सत्यव्रत और गालव की कथा ।

८—सत्यव्रत का त्रिशंकु नाम होने का कारण, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, सगर और भगीरथ की कथा और गंगा का भागीरथी नाम होने का कारण ।

९—सोम और बुध का चरित ।

१०—राजा पुरूरवा का चरित और उस के वंश की कथा, गाधि का चरित, जमदग्नि और परशुराम तथा विश्वामित्र की जन्म-कथा ।

११—आयु के पाँच पुत्रों की उत्पत्ति, रजेश्वर-चरित, अनेना का वंश और धन्वन्तरि भगवान् का जन्म, आयुर्वेद का विभाग ।

१२—राजा ययाति के वंश की कथा ।

१३—पुरुवंश की कथा और कार्तवीर्य अर्जुन का वर्णन और उसको आपव मुनि का शाप लगना ।

१४—वसुदेवजी का जन्म और उनकी स्त्रियों के नाम ।

१५—ज्यामघ का चरित, बभ्रु और देवावृध की महिमा

का वर्णन, देवक को सात कुमारियों की प्राप्ति की कथा और कंस के जन्म की कथा।

१६—सत्राजित का चरित, स्यमन्तक मणि की कथा, श्रीकृष्ण का जाम्बवती और सत्यभामा के साथ विवाह।

१७—शतधन्वा के हाथ से सत्राजित का मरना और मणि लाकर अक्रूर के पास रखना।

१८—भूगोल और सातों द्वीपों का वर्णन।

१९—भारतवर्ष का वर्णन।

२०—द्वीप-द्वीपान्तरों का वर्णन।

२१—पाताल आदि सातों लोकों का वर्णन।

२२—स्वर्ग और नरक की कथा और रौरव आदि नरकों का वर्णन।

२३—आकाश और पृथिवी की नाप, सूर्यमण्डल और सातों लोकों की लम्बाई-चौड़ाई का हाल तथा महत्त्व आदि की उत्पत्ति।

२४—शिशुमार चक्र और ध्रुवलोक का वर्णन।

२५—शरीर-तीर्थों का वर्णन।

२६—कृष्ण-द्वैपायन का संवाद।

२७—भरतखण्ड और उसके भीतर के पर्वत, नद, नदी और देशों का वर्णन।

२८—औड्र देश के रहनेवाले ब्राह्मणों की प्रशंसा, कोणादित्य और रामेश्वर-लिंग-वर्णन।

२९—सूर्य की पूजा का माहात्म्य-वर्णन।

३०—सूर्य ही से सारे जगत् की उत्पत्ति का कथन, सूर्य की बारह मूर्त्तियों का वर्णन, मित्र नामक सूर्य और नारद जी का संवाद ।

३१—चैत्र आदि महीनों के नाम पर सूर्य के बारह नामों का वर्णन ।

३२—अदिति का सूर्य की आराधना करना, सूर्य का दर्शन, अदिति के गर्भ से सूर्य का जन्म, आदि आदि सूर्य के चरित ।

३३—ब्रह्मा आदि देवों का सूर्य को वर देना और सूर्य के १०८ नामों की कथा ।

३४—रुद्र की महिमा, दाक्षायणी का संवाद और पार्वती की कथा ।

३५—उमा और मित्र का संवाद और शिव-पार्वती के संवाद की कथा ।

३६—पार्वती के स्वयंवर की कथा, स्वयंवर में सब देवों का आना और शिव के साथ पार्वती का विवाह ।

३७—देवताओं का किया हुआ महेश्वर-स्तोत्र, शिव का अपने स्थान में बसना ।

३८—शिव के नेत्र की आग से कामदेव का भस्म होना, रति का शिव के वर से अपने अभीष्ट स्थान को जाना और पार्वती के क्रोध को शान्त करने के लिए शिव का बोलना ।

३९—दक्ष के यज्ञ के आरम्भ में दधीचि और दक्ष की बातचीत; उमा और महेश्वर का संवाद, वीरभद्र का जन्म,

उसके द्वारा दक्ष के यज्ञ का विध्वंस, शिव को यज्ञ-भाग का मिलना, शिव से दक्ष को वरलाभ और दक्ष का कहा हुआ 'शिवाष्टसहस्रनाम' स्तोत्र।

४०—शिवकृत ज्वर-विभाग।

४१—एकाम्रक्षेत्र का वर्णन।

४२—विरजा क्षेत्र और उसी के भीतर और अनेक तीर्थों की कथा।

४३—अवन्ति-माहात्म्य।

४४—इन्द्रद्युम्न की कथा।

४५—विष्णु कृत सृष्टि का वर्णन, पुरुषोत्तम क्षेत्र में स्थित वटवृक्ष और उसके दक्षिण की ओर विष्णु की मूर्त्ति का वर्णन।

४६—पुरुषोत्तम क्षेत्र, उसकी चित्रोत्पला नदी और दोनों नदियों के किनारे के गाँवों और उनमें रहनेवाले लोगों का हाल।

४७—इन्द्रद्युम्न का यज्ञ के लिए एक बहुत बड़ा महल बनाना।

४८—प्रतिमा-प्राप्ति की इच्छा से इन्द्रद्युम्न का सब भोग-विलासों को छोड़ना।

४९—इन्द्रद्युम्न के द्वारा विष्णु की स्तुति।

५०—चिन्तातुर राजा को स्वप्न में भगवान् का दर्शन।

५१—प्रतिमा-प्राप्ति के उपाय का ज्ञान और विश्वकर्मा द्वारा तीन मूर्त्तियों का लाना।

५२—राजा इन्द्रद्युम्न को विष्णुपद की प्राप्ति, ब्रह्मा के किये हुए पुरुषोत्तम क्षेत्र के बीच में ही पाँच और तीर्थों का वर्णन ।

५३—मार्कण्डेय की कथा, कल्पवट का दर्शन, मार्कण्डेय को भगवान् का दर्शन, और उनसे भगवान् की बात-चीत ।

५४—भगवान् के पेट में मार्कण्डेय का घुसना और वहीं पृथिवी का दर्शन ।

५५—मार्कण्डेय का भगवान् के पेट से बाहर निकलना; और उनके द्वारा भगवान् की स्तुति करना ।

५६—भगवान् के अन्तर्धान हो जाने की कथा ।

५७—मार्कण्डेय-ह्रद की प्रशंसा और पञ्चतीर्थों का वर्णन ।

५८—नरसिंह की पूजा की विधि ।

५९—कपाल गौतम ऋषि के मरे हुए पुत्र के जिलाने के लिए श्वेत राजा की प्रतिज्ञा । श्वेत-माधव के स्थान की कथा और श्वेत के प्रति विष्णु भगवान् का वर देना ।

६०—नारायण-कवच और समुद्र-स्नान की विधि ।

६१—शरीर की शुद्धि और पूजा की विधि ।

६२—समुद्र में स्नान करने का माहात्म्य ।

६३—पंचतीर्थ-माहात्म्य ।

६४—महाज्यैष्ठी-प्रशंसा ।

६५—श्रीकृष्ण के स्नान की विधि और स्नान का माहात्म्य ।

६६—गुण्डियात्रा का माहात्म्य ।

असमञ्जस का देश-निकाला, भगीरथ का जन्म और गङ्गा का लाना ।

७९—वाराह-तीर्थ का वर्णन ।

८०—लुब्धक-चरित ।

८१, ८२, ८३—स्कन्द की विषयासक्ति और बुलाई हुई स्त्रियों के माता के समान रूप देखने से विषय को छोड़ना, कुमारतीर्थ की कथा ।

८४—केशरी नामक वानर का दक्षिण के समुद्र में जाना, अञ्जना और अद्रिका के पुत्र होने की कथा और पैशाच नामक तीर्थ का वर्णन ।

८५—क्षुधा-तीर्थ की उत्पत्ति की कथा ।

८६—विश्वधर नामक एक वैश्य की कथा और चक्रतीर्थ की उत्पत्ति की कथा ।

८७—अहल्या के लाने के लिए गौतमजी की पृथ्वी-प्रदक्षिणा, अहल्या और इन्द्र का संवाद, गौतम का अहल्या को शाप, अहल्या को फिर अपने रूप का मिलना और इन्द्र-तीर्थ का वर्णन ।

८८—वरुण और याज्ञवल्क्य का संवाद, जनस्थान-तीर्थ का वर्णन, ऊषा और सूर्य का समागम, उन दोनों से गंगा में कुमार की उत्पत्ति और त्वष्टा से कुमार की बातचीत ।

८९—शेषजी के पुत्र मणिनाग द्वारा शिवजी की स्तुति ।

९०—विष्णु भगवान् के द्वारा गरुड़ के अभिमान का खण्डन करना, गरुड़ के द्वारा विष्णु की स्तुति, गङ्गा के

स्नान से गरुड़ को वज्रदेह का मिलना और विष्णु की प्राप्ति।

९१—गोवर्धनतीर्थ की कथा।

९२—धौतपाप नामक तीर्थ की उत्पत्ति।

९३—विश्वामित्र-तीर्थ या कौशिक-तीर्थ का स्वरूप-कथन।

९४—श्वेताख्यान और यम को फिर जीवन मिलने की कथा।

९५—शुक्रद्वारा शिवजी की स्तुति, और शिवजी से उनको मृतसञ्जीवनी विद्या का मिलना।

९६—मालव देश के नाम का कारण।

९७—वरुण से कुबेर की हार और कुबेर की शिव-स्तुति।

९८—अग्नितीर्थ की उत्पत्ति की कथा।

९९—कक्षीवान् के पुत्रों से तीन ऋणों के छुड़ाने के लिए विवाह कराने का उपदेश. विवाह कराने में उनकी बेपरवाही, उनको गौतमी नदी में स्नान करने के लिए उपदेश।

१००—वालखिल्यगणों का कश्यप से पुत्र पैदा करने की कथा का कहना, सुपर्णी का जन्म, ऋषि-यज्ञ में कद्रू और सुपर्णी का जाना, और ऋषियों के शाप से उसका नदी हो जाना।

१०१—पुरूरवा और उर्वशी अप्सरा की बातचीत, सरस्वती को ब्रह्मा का शाप और स्त्री-स्वभाव का वर्णन ।

१०२—मृग का रूप धारण किये हुए ब्रह्मा से व्याध-रूपधारी शिव की बातचीत. सावित्री आदि पाँच नदियों का ब्रह्मा के पास जाना ।

१०३—शम्यादि तीर्थों का वर्णन ।

१०४—हरिश्चन्द्र की कथा, वरुण देवता की कृपा से उसके पुत्र का होना, उसके रोहित नामक पुत्र के लेने के लिए वरुण की प्रार्थना, रोहित का वन में जाना, अजीगर्त का पुत्र बेचना, अजीगर्त के पुत्र शुनःशेप पर विश्वामित्र का प्रसन्न होना, विश्वामित्र के द्वारा शुनःशेप के बड़ा पुत्र होने की कथा ।

१०५—गंगा से मिलनेवाली नदियों का वर्णन ।

१०६—देव और दैत्यों की सलाह, समुद्रमन्थन, समुद्र से अमृत का निकलना, विष्णु द्वारा राहु का सिर काटना । राहु का अभिषेक ।

१०७—एक बुढ़िया और गौतम ऋषि की बातचीत, गङ्गा के वर से बुढ़िया का फिर जवान हो जाना और गौतम के साथ सहवास ।

१०८—इला-तीर्थ की कथा और उसी के साथ इला का चरित ।

१०९—चक्रतीर्थ का वर्णन और दक्ष-यज्ञ की कथा ।

१५१—उर्वशी के त्यागे हुए पुरूरवा के प्रति वसिष्ठजी का उपदेश ।

१५२—चन्द्रमा के द्वारा तारा (बृहस्पति की स्त्री) का हरण और तारा का उद्धार ।

१५३—भावतीर्थ आदि सात तीर्थों का वर्णन ।

१५४—सहस्र-कुण्ड आदि तीर्थों की कथा के प्रसंग में रावण को मार कर रामचन्द्रजी का अयोध्या में जाना, वहाँ सीता का वनवास, रामाश्वमेध-यज्ञ की कथा और लव-कुश का वृत्तान्त ।

१५५—कपिला-संगम आदि दस तीर्थों की कथा के प्रसंग में अंगिरा को सूर्य का भूमिदान करना ।

१५६—शंखतीर्थ आदि दस हज़ार तीर्थों का वर्णन और ब्रह्मा के खाने के लिए आये हुए राक्षसों का विष्णुचक्र के द्वारा मारा जाना ।

१५७—किष्किन्धा-तीर्थ का वर्णन, रावण को मार कर सीता के साथ रामचन्द्रजी का गौतमी के पास आना ।

१५८—व्यास-तीर्थ की कथा । आङ्गिरस का वर्णन ।

१५९—वञ्जरा-संगम और गरुड़ की कथा ।

१६०—देवागमतीर्थ और देवासुर-सङ्ग्राम का वर्णन ।

१६१—कुश-तर्पणतीर्थ और विराट की उत्पत्ति की कथा ।

१६२—मन्यु पुरुष की कथा ।

१६३—ब्रह्मा का रूप धारण करनेवाले परशु नामक राक्षस और शाकल्य की कथा ।

१६४—राजा पवमान और चिञ्चिक पत्नी का संवाद ।

१६५—भद्रतीर्थ और एक कन्या के विवाह की कथा ।

१६६—पतत्त्रितीर्थ का वर्णन ।

१६७—भानु आदि सौ तीर्थों का वर्णन ।

१६८—अभिष्टुत राजा के अश्वमेध-यज्ञ का वर्णन ।

१६९—वेद नामक एक द्विज और शिवपूजक व्याध की कथा ।

१७०—चक्षुतीर्थ और गौतम तथा कुण्डलक नामक वैश्य की कथा ।

१७१—उर्वशी-तीर्थ और इन्द्र तथा प्रमति की कथा ।

१७२—सामुद्र-तीर्थ और गंगा तथा सागर का संवाद ।

१७३—भीमेश्वरतीर्थ और सात तरह से बहनेवाली गङ्गा की कथा ।

१७४—गङ्गासागर-सङ्गम, सोमतीर्थ और बार्हस्पत्य आदि तीर्थों की कथा ।

१७५—गौतमी-माहात्म्य और गङ्गावतरण की कथा ।

१७६—अनन्त वासुदेव का माहात्म्य, देवों के साथ रावण का युद्ध और राम और रावण की लड़ाई ।

१७७—पुरुषोत्तम-माहात्म्य ।

१७८—कण्डु-मुनि का चरित ।

१७९—व्यासजी से श्रीकृष्णावतार का प्रश्न ।

१८०—कृष्ण-चरित का आरम्भ ।

१८१—अवतार लेने का प्रयोजन, कंस द्वारा देवकी का कारागार (जेल) में डालना ।

१८२—ईश्वर की माया से देवकी का गर्भ, रोहिणी के पेट में गर्भस्थिति, देवकी के उदर में भगवान् श्रीकृष्ण का आना, देवकी से श्रीकृष्ण की बातचीत, वसुदेव का गोकुल में जाकर श्रीकृष्ण को वहीं छोड़ आना, माया का आकाश में जाकर कंस के डराने के लिए भविष्य-कथन, देवगणों के द्वारा माया की स्तुति ।

१८३—बालकों के मारने के लिए कंस का दैत्यों को भेजना और वसुदेव तथा देवकी को बन्धन से छुड़ाना ।

१८४—वसुदेव और नन्द की बातचीत, पूतना का मारना, शकट का मारना, गर्ग ऋषि द्वारा बालकों का नामकरण संस्कार, यमलार्जुन-वृक्षों का उखाड़ना, कृष्ण की बाल-लीला ।

१८५—कालिय-नाग-दमन ।

१८६—धेनुकासुर-वध ।

१८७—राम और कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन ।

१८८—इन्द्र का गोकुल के नाश करने के लिए मेघों को भेजना, श्रीकृष्ण का गोवर्धन पर्वत को उठाना, इन्द्रकृत श्रीकृष्ण-स्तुति, इन्द्र से श्रीकृष्ण की बातचीत और गोवर्धन-याग ।

१८९—रासलीला और अरिष्टासुर का वध ।

१९०—कंस और नारद का संवाद, अक्रूर का भेजना और केशी का वध ।

१९१—गोकुल में अक्रूर का जाना ।

१९२—श्रीकृष्ण और अक्रूर की बातचीत, बलदेवजी और श्रीकृष्ण का मथुरा में जाना।

१९३—कुब्जा के साथ कृष्णचन्द्र की बातचीत, चाणूर और मुष्टिक दैत्य का वध, कंसवध और वसुदेव के द्वारा भगवान् की स्तुति।

१९४—वसुदेव और देवकी के पास श्रीकृष्णजी का जाना, कंस के मर जाने पर उसके बाप उग्रसेन को राजगद्दी पर बिठाना, राम और कृष्ण को सान्दीपनि के पास से अस्त्र की प्राप्ति और सान्दीपनि को पुत्र-प्राप्ति।

१९५—राम-कृष्ण का जरासन्ध के साथ युद्ध और जरासन्ध का वध।

१९६—कालयवन की उत्पत्ति, मुचुकुन्द के द्वारा कालयवन का मारा जाना और मुचुकुन्द के द्वारा भगवान् के गुणों का वर्णन।

१९७—मुचुकुन्द को भगवान् का वरदान देना और गोकुल में बलदेवजी का आना।

१९८—वरुण-वारुणी और यमुना-बलदेव का संवाद और बलदेवजी का फिर मथुरा में आना।

१९९—श्रीकृष्ण का रुक्मिणी-हरण और प्रद्युम्न की उत्पत्ति।

२००—शम्बरासुर द्वारा प्रद्युम्न का हरण, शम्बरासुर-वध, प्रद्युम्न का द्वारका को लौट आना और श्रीकृष्ण-नारद का संवाद।

२०१—रुक्मिणी के पुत्रों के नाम, कृष्णचन्द्र की स्त्रियों के नाम और बलदेवजी द्वारा रुक्मिवध।

२०२—कृष्णचन्द्रजी का प्राग्ज्योतिषपुर में जाना और नरकासुर-वध ।

२०३—श्रीकृष्ण और अदिति का संवाद और पारिजात-हरण ।

२०४—इन्द्र-श्रीकृष्ण-संवाद, ऊषा के साथ अनिरुद्ध के विवाह का वर्णन, चित्रलेखा का चित्रनिर्माण-कौशल ।

२०५—बाणासुर के नगर (शोणितपुर) में अनिरुद्ध का लाया जाना ।

२०६—श्रीकृष्ण और बलदेवजी का युद्ध के लिए जाना ।

२०७—पौंड्रक-वासुदेव की कथा, पौंड्रक और काशिराज का वध, श्रीकृष्ण के चक्र से काशीपुरी का दाह, फिर कृष्णचन्द्र के हाथ में चक्र का आना ।

२०८—साम्ब द्वारा दुर्योधन की कन्या का हरण, दुर्योधन आदि के द्वारा साम्ब का पकड़ा जाना, बलदेवजी के साथ कौरवों का युद्ध, बलदेवजी का हस्तिनापुर पर अधिकार करना और कौरवों की प्रार्थना ।

२०९—बलदेवजी के द्वारा द्विविद वानर का वध ।

२१०—श्रीकृष्ण का द्वारका को छोड़ना और प्रभासक्षेत्र में यदुवंश का विध्वंस ।

२११—श्रीकृष्ण की प्रसन्नता से लुब्धक का स्वर्गगमन ।

२१२—रुक्मिणी आदि का परलोकगमन, भीलों के साथ अर्जुन का युद्ध, म्लेच्छों के द्वारा यादवों की स्त्रियों का हरण,

अर्जुन का दुखी होना, अष्टावक्र की कथा, अर्जुन के मुँह से श्रीकृष्णचन्द्र आदि के परलोकगमन का समाचार सुनकर युधिष्ठिर का भाइयों सहित महायात्रा के प्रस्थान को उद्यत होना और परीक्षित को राज्यभार सौंप कर युधिष्ठिर आदि का वनगमन और श्रीकृष्ण-चरित की समाप्ति ।

२१३—वाराह-अवतार, नृसिंह-अवतार, वामन-अवतार, दत्तात्रेय-अवतार, जामदग्न्यावतार, श्रीरामचन्द्र-अवतार, श्रीकृष्णावतार और कल्क्यवतार का वर्णन ।

२१४—नरक और यमलोक की कथा ।

२१५—दक्षिणमार्ग से जानेवाले प्राणियों के क्लेशों का वर्णन, चित्रगुप्त-कृत पाप-वर्णन और पातक के अनुसार नरक की प्राप्ति का कथन ।

२१६—श्रीव्यासदेव-कृत धर्माचार का वर्णन और अच्छी गति की प्राप्ति का वर्णन ।

२१७—अनेक प्रकार की योनियों में जन्म होने का वर्णन।

२१८—अन्न-दान का माहात्म्य ।

२१९—श्राद्ध की विधि ।

२२०—श्राद्धकल्प और पिण्डदान ।

२२१—सदाचार का वर्णन और ब्राह्मण के रहने योग्य देशों का हाल ।

२२२—वर्णधर्म-कथन ।

२२३—ब्राह्मणों के शूद्र हो जाने और शूद्रों के उत्तम वर्ण होने का वर्णन, और वर्णसङ्करों का हाल ।

२२४—मनुप्रोक्त धर्मों का फल और कर्म-फलों की कथा ।

२२५—देवलोक की प्राप्ति और नरक की प्राप्ति का कारण ।

२२६—वासुदेव की महिमा, मनु का वंश और वासुदेव की पूजा ।

२२७—उर्वशी और एक मूर्ख ब्राह्मण का संवाद और शकटदान की कथा ।

२२८—कपाल-मोचन तीर्थ और सूर्य आदि की आराधना, कामदेव की कथा और माया की उत्पत्ति ।

२२९—महाप्रलय का वर्णन और कलियुग के भविष्य का कथन ।

२३०—द्वापरयुग का अन्त और भविष्य का वर्णन ।

२३१—सृष्टि और प्रलय-सम्बन्धी वर्णन ।

२३२—प्राकृत लय का स्वरूप वर्णन ।

२३३—आत्यन्तिक प्रलय, तीन प्रकार के तापों का वर्णन, और मुक्ति के ज्ञान की महिमा ।

२३४—योगाभ्यास का फल ।

२३५—योग और सांख्य का वर्णन ।

२३६—मोक्ष की प्राप्ति और पञ्च-महाभूतों की कथा ।

२३७—सब धर्मों के विशेष धर्मों का वर्णन ।

२३८—क्षर-अक्षर के विचार का निरूपण और चौबीस तत्त्वों का वर्णन ।

२३९—अभिमानियों के साधनों का वर्णन ।

२४०—सांख्य-ज्ञान और क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ का वर्णन ।

२४१—अभेद में सांख्य-योग का वर्णन ।

२४२—जनक और वशिष्ठ का संवाद ।

२४३—व्यासजी की प्रशंसा, ब्रह्मपुराण के सुनने का माहात्म्य और धर्म की प्रशंसा ।

२—पद्मपुराण

यह पुराण पाँच खण्डों में बँटा हुआ है । उन पाँचों खण्डों के नाम ये हैं ।

१—सृष्टिखण्ड

४—भूमिखण्ड

३—स्वर्गखण्ड

४—पातालखण्ड

५—उत्तरखण्ड

इन पाँचों खण्डों में क्रम से ८२, १२५, ३९, ११७ और २८२ अध्याय हैं । इन पाँचों खण्डों में सब मिला कर कोई ५५,००० श्लोक हैं । यह खण्ड आदि की सूची गौडीय पाद्मोत्तर-खण्ड और नारदपुराण के अनुसार है, परन्तु पद्मपुराण के सृष्टि-खण्ड में जो सूची दी गई है वह इसके विरुद्ध है । उसमें खण्ड नहीं, पर्व माने हैं । उसके अनुसार पहला पौष्कर-पर्व है जिसमें विराट् पुरुष कि उत्पत्ति कही गई है । दूसरा तीर्थ-पर्व है । उसमें सब ग्रहों

की कथा वर्णित है । तीसरे पर्व में बड़े बड़े दानी राजाओं की कथा लिखी गई है । चौथे पर्व में बड़े बड़े जनों के जीवनचरित और वंश-कथा का वर्णन है और पाँचवें पर्व में मोक्षतत्त्व का वर्णन किया गया है । खुलासा यह है कि पहले पर्व में ब्रह्मा के द्वारा नौ तरह की सृष्टि-रचना, देवता, मुनि और पितरों की कथा है; दूसरे में पर्वतों, द्वीपों और सातों समुद्रों का हाल है; तीसरे पर्व में रुद्रसर्ग और दक्षशाप की कथा है ; चौथे में राजाओं की उत्पत्ति की कथा और उनके जीवन-वृत्तान्त भी लिखे हैं ; और पाँचवें पर्व में मोक्ष के साधन और मोक्ष-शास्त्र का परिचय इत्यादि वर्णित है ।

सृष्टि-खण्ड में इस प्रकार पर्व के होने की कथा देखते हुए और आज कल पद्मपुराण में पर्वों का सर्वथा अभाव देख कर हमें बड़ा आश्चर्य होता है । अच्छा, यह तो हुई पद्मपुराण के सृष्टि-खण्ड की बात। अब उसी पुराण के उत्तरखण्ड की राय सुनिए। उसमें पाँचों खण्डों का ब्यौरा इस तरह है:—

१—सृष्टिखण्ड
२—भूमिखण्ड
३—पातालखण्ड
४—पौष्करखण्ड
५—उत्तरखण्ड

देखिए, यहाँ चौथा पौष्करखण्ड बतलाया गया है पर आज-कल पद्मपुराण में का कहीं नाम-निशान भी नहीं मिलता ।

नारद-पुराण में पद्मपुराण के खण्डों की विषय-सूची भी दी

गई है। उसी सूची के अनुसार हम यहाँ पद्मपुराण की कथा का वर्णन लिखते हैं। क्योंकि हर एक अध्याय की सूची देने में बड़ा भारी तूल होजाता। इसलिए हमने संक्षेप से ही कथा-सूची देनी अच्छी समझी। वह इस प्रकार है।

१—प्रथम सृष्टिखण्ड में सृष्टि की रचना के विषय में तरह तरह की कथायें लिखी हैं। इतिहास के साथ साथ विस्तारपूर्वक धर्म की कथायें लिखी गई हैं। फिर पुष्कर-माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञ-विधान, वेदपाठी आदि के लक्षण, दान, व्रत, पार्वती का विवाह, तारक की कथा, पुण्यदायक गयादि का माहात्म्य और कालकेय दैत्य का वध, ग्रहों की पूजा और दान इत्यादि कथाओं का वर्णन है।

दूसरे भूमिखण्ड में माता-पिता आदि की पूजा, शिवशर्म की कथा, सुव्रत की कथा, वृत्रासुर के मारने की कथा, पृथु और वेन राजाओं की कथा और धर्म-विचार, पिता की सेवा, नहुष की कथा, ययाति और गुरु तथा तीर्थ का वर्णन, एक राजा और जैमिनि मुनि का संवाद, हुण्ड दैत्य का आश्चर्यजनक चरित, अशोकसुन्दर का वृत्तान्त, विहुंड का वध,' और कामोदाख्यान, महात्मा च्यवन और कुण्डल का संवाद, सूत-शौनक के संवाद में भारत-भूमि का सविस्तर वृत्तान्त दिया गया है।

तीसरे स्वर्ग-खण्ड में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, भूमि के साथ और लोकों के ठहरने की कथा, तीर्थों का वर्णन, नर्मदा की उत्पत्ति की कथा, कुरुक्षेत्र आदि पवित्र तीर्थों का वृत्तान्त, कालिन्दी नदी की कथा, काशी, गया और प्रयाग का माहात्म्य-वर्णन,

वर्णाश्रम-धर्मों की कथा, व्यास और जैमिनि का संवाद, समुद्र-मथन की कथा, ऊर्ज्ज और पञ्चाह-माहात्म्य और सर्वापराधभञ्जन स्तोत्र आदि सब पापों के नाश करने वाले उपायों का वर्णन है ।

चौथे पाताल-खण्ड में, रामचन्द्रजी का अश्वमेध यज्ञ करना, राज्याभिषेक, अगस्त्य का आना, पौलस्त्य-चरित, अश्वमेध करने की सलाह, हयचर्या और अनेक राजों की कथा, जगन्नाथ और वृन्दावन का माहात्म्य, श्रीकृष्णावतार की अनेक लीलाओं की कथा; माघ-मास में स्नान, दान और पूजा-पाठ का फल ; पृथ्वी और वाराह का संवाद, यमराज और ब्राह्मण की कथा, राजदूतों का संवाद, कृष्णस्तोत्र, शिवशम्भुसमायोग, दधीचि की कथा, भस्ममाहात्म्य, शिवमाहात्म्य, देवरात-सुत की कथा, पुराण के जानने वाले की प्रशंसा, शिवगीता और भरद्वाज के आश्रम में ठहरे हुए रामचन्द्रजी की कथा है ।

पाँचवें उत्तर-खण्ड में गौरी के प्रति शिवजी का पर्वत-वर्णन, जालन्धर दैत्य की कथा, श्रीशैलमाहात्म्य, राजा सगर की कथा, गङ्गा, प्रयाग, काशी और गया की कथा, २४ प्रकार की एकादशी की कथा, एकादशी-माहात्म्य, विष्णुधर्म, विष्णुसहस्रनाम, कार्त्तिक-व्रत-माहात्म्य, माघस्नान का फल, जंबूद्वीप के अनेक तीर्थों की कथा, साभ्रमती-माहात्म्य, नृसिंह की उत्पत्ति, देवशर्मा आदि की कथा, गीता-माहात्म्य, भक्तों की कथा, श्रीमद्भागवत का माहात्म्य, अनेक तीर्थों की कथा, मन्त्र-रत्न, त्रिपाद-विभूति का वर्णन, मत्स्य आदि अवतारों की कथा, राम-शतनाम और

उनका माहात्म्य, भृगु की परीक्षा और विष्णु भगवान् के वैभव की कथा है ।

३—विष्णु-पुराण

तीसरे पुराण का नाम विष्णु-पुराण है । इसमें ६ अंश हैं । इसकी श्लोक-संख्या, जो दूसरे पुराणों में दी गई है, २३ हज़ार है । परन्तु प्रचलित विष्णु-पुराण में इतने श्लोक नहीं हैं । उसमें तो मुश्किल से कोई ७ हज़ार होंगे । १६ हज़ार कम ! किसी किसी की राय है कि ब्रह्मोत्तर-खण्ड को भी विष्णुपुराण का अन्तिम अंश मानना चाहिए । अच्छा, हम ब्रह्मोत्तर को भी थोड़ी देर के लिए, उसमें शामिल कर लें तो भी २३ हज़ार श्लोक पूरे नहीं होते । दोनों को मिलाने पर भी १६ हज़ार ही श्लोक होते हैं । समझ में नहीं आता कि यह क्या गोरखधन्धा है ।

अस्तु, अब वर्तमान विष्णुपुराण के ६ अंशों के अध्याय और उनकी कथा-सूची सुनिए ।

विष्णुपुराण के पहले अंश में २२, दूसरे में १६, तीसरे में १८, चौथे में २४, पाँचवें में ३८ और छठे में ८ अध्याय हैं । सब मिलाकर कुल १२६ अध्याय हैं । अब क्रमशः हर एक अंश के अध्यायों की कथा-सूची सुनिए ।

पहला अंश ।

१—पराशर के प्रति मैत्रेय का प्रश्न ।

२—विष्णुस्तुति और संसार की सृष्टि की कथा ।

दूसरा अंश ।

तीसरा अंश ।

३—वेदव्यास के अट्ठाईस नामों का वर्णन ।

४—वेदव्यास का माहात्म्य और वेदों के विभाग की कथा।

५—यजुर्वेद की शाखाओं का विभाग और सूर्य की स्तुति ।

६—साम और अथर्ववेद की शाखाओं का विभाग, पुराणों के नाम और पुराण के लक्षण ।

७—यम-गीता ।

८—विष्णु की पूजा का फल और चारों वर्णों के धर्म ।

९—चारों आश्रमों के धर्म ।

१०—जातकर्म और कन्या का लक्षण ।

११—गृहस्थ का सदाचार।

१२—गृहस्थ के आचार का वर्णन ।

१३—मुर्दे का दाह, उसका अशौच, एकोद्दिष्ट श्राद्ध और सपिण्डीकरण ।

१४—श्राद्ध का फल और पितृ-गीता ।

१५—श्राद्ध में भोजन कराने योग्य ब्राह्मण की पहचान और योगी की प्रशंसा ।

१६—श्राद्ध में नपुंसक आदि न देखना ।

१७—नग्न का लक्षण, भीष्म और वशिष्ठ का संवाद, विष्णु की स्तुति और माया-मोह की उत्पत्ति ।

१८—असुरगणों के प्रति माया-मोह का उपदेश, बौद्ध धर्म की उत्पत्ति, नग्न-सम्पर्क-दोष और शतधनु नामक राजा की कथा ।

चौथा अंश ।

१—वंश के विस्तार की कथा, ब्रह्मा और दक्ष आदि की उत्पत्ति, पुरूरवा का जन्म और रेवती के साथ बलदेवजी का विवाह ।

२—इक्ष्वाकु का जन्म, ककुत्स्थवंश, युवनाश्व और सौभरि की कथा ।

३—साँप के मारने का मन्त्र, अनरण्यवंश और सगर की उत्पत्ति ।

४—सगर का अश्वमेध यज्ञ करना, भगीरथ का गङ्गा को लाना, और श्रीरामचन्द्रजी का जन्म ।

५—विश्वामित्र के यज्ञ की कथा और सीताजी की उत्पत्ति और कुशध्वज के वंश का वर्णन ।

६—चन्द्रवंश-कथन, तारा-हरण और तीनों अग्नियों की उत्पत्ति ।

७—राजा पुरूरवा और चन्द्रवंश का वर्णन ।

८—आयु का वंश, धन्वन्तरि की उत्पत्ति और उसका वंश ।

९—रात्रि और [illegible]ओं की लड़ाई और क्षत्रवृद्धि की वंशावली ।

१०—नहुष-वंश और ययाति की कथा ।

११—यदुवंश और कार्तवीर्य अर्जुन के जन्म की कथा ।

१२—क्रोष्टुवंश की कथा ।

१३—स्यमन्तकमणि की कथा, जाम्बवती और सत्यभामा का श्रीकृष्ण के साथ विवाह और गान्दिनी की कथा ।

पाँचवाँ अंश।

४—कंस का अपनी रक्षा के लिए उपाय सोचना और वसुदेव तथा देवकी को बन्धन से छुड़ाना ।

५—श्रीकृष्ण को मारने के लिए कंस की भेजी हुई पूतना नाम की राक्षसी का मारा जाना ।

६—शकट-भंजन और कृष्ण-बलदेव का नामकरण-संस्कार ।

७—कालियदमन-लीला ।

८—धेनुकासुर का मारना ।

९—प्रलम्बासुर-वध ।

१०—इन्द्रयज्ञ का उत्सव और गोवर्धन-पूजा ।

११—इन्द्र के द्वारा महावृष्टि और श्रीकृष्ण का गोवर्धन-धारण ।

१२—श्रीकृष्ण के पास इन्द्र का आना ।

१३—राम और गोपी-सङ्गीत ।

१४—अरिष्टासुर का वध ।

१५—कंस के पास नारद मुनि का आना ।

१६—केशी-वध ।

१७—श्रीकृष्ण के बुलाने के लिए अक्रूर का वृन्दावन में जाना ।

१८—श्रीकृष्ण की मथुरा-यात्रा ।

१९—श्रीकृष्ण का धोबी को मार कर माली के घर जाना ।

२०—कुब्जा पर प्रसन्न होना, धनुष-शाला में जाना और कंस-वध ।

२१—कंस के मारे जाने पर उसके पिता उग्रसेन को राजगद्दी पर बिठाना और मथुरा में सुधर्मा सभा को लाना।

२२—जरासन्ध-पराजय।

२३—कालयवन की उत्पत्ति और उसका वध।

२४—बलदेव की वृन्दावन-यात्रा।

२५—बलदेव का वारुणी-लाभ और यमुना को खींचना।

२६—रुक्मिणी-हरण।

२७—प्रद्युम्न-हरण, मायावती को प्रद्युम्न का मिलना और प्रद्युम्न के हाथ से शम्बर दैत्य का वध।

२८—बलदेवजी के द्वारा रुक्मिणी के भाई का वध।

२९—श्रीकृष्ण को सोलह हज़ार स्त्रियों के मिलने की कथा।

३०—पारिजात-हरण और इन्द्र आदि का युद्ध।

३१—इन्द्र की क्षमा-प्रार्थना और द्वारिका-गमन।

३२—बाणासुर-युद्ध के प्रसंग में उषा का स्वप्न-वर्णन।

३३—अनिरुद्ध-हरण, शिव-युद्ध और कृष्ण-द्वारा बाणासुर की भुजा का छेदन।

३४—पौंड्रक काशिराज-वध और काशीपुरी का दाह।

३५—लक्ष्मणा-हरण और साम्ब को बन्धन से छुड़ाना।

३६—द्विविद-वध।

३७—मूसल की उत्पत्ति, यदुवंश का विध्वंस और श्रीकृष्ण का वैकुण्ठ-गमन।

३८—कलियुगारम्भ, अर्जुन को व्यास का उपदेश और राजा परीक्षित को राज्याभिषेक ।

छठा अंश ।

१—कलि के स्वरूप और कलि के धर्मों का कथन ।

२—थोड़े से ही धर्म से बहुत फल मिलने की कथा ।

३—कल्प की कथा और ब्रह्मा के दिन का वर्णन ।

४—प्रलय में ब्रह्मा की स्थिति और प्राकृतिक प्रलय ।

५—तरह तरह के दुःखों और नरकों का वर्णन और अद्वितीय ब्रह्म का निरूपण ।

६—योग-कथन, केशिध्वज की कथा, धर्मधेनु-वध और खांडिक्य की मन्त्रणा ।

७—आत्म-ज्ञान, देहात्म-वाद की निन्दा । योग-प्रश्न, तीन तरह की भावना, ब्रह्मज्ञान, साकार-निराकार-धारणा, खाण्डिक्य तथा केशिध्वज की मुक्ति ।

८—विष्णुपुराण की प्रशंसा, विष्णु-नाम-स्मरण का माहात्म्य, फल और विष्णु की महिमा ।

४—शिवपुराण ।

शिवपुराण को किसी किसी ने वायुपुराण भी कहा है । इस पुराण में, नाम के अनुसार, शिव की महिमा गाई गई है । पर किसी किसी की राय में शिवपुराण और वायुपुराण भिन्न भिन्न हैं ।

प्रचलित शिवपुराण में छः संहितायें हैं। उनके नाम ये हैं, को :-

१—ज्ञान-संहिता ।

२—विद्येश्वर-संहिता ।

३—कैलास-संहिता ।

४—सनत्कुमार-संहिता ।

५—वायवीय-संहिता ।

६—धर्म-संहिता ।

पाँचवीं वायवीय-संहिता में जो शिवपुराण की सूची है, उसके देखने से मालूम होता है, कि शिवपुराण में छः नहीं, बारह संहितायें हैं। उन संहिताओं के नाम श्लोक-संख्या सहित इस प्रकार हैं;—

१—विद्येश्वर-संहिता	श्लोकसंख्या	१०,०००
२—रौद्र-संहिता	,,	८,०००
३—विनायक-संहिता	,,	८,०००
४—औम-संहिता	,,	८,०००
५—मातृ-संहिता	,,	८,०००
६—रुद्रैकादश-संहिता	,,	१३,०००
७—कैलास-संहिता	,,	६,०००
८—शतरुद्र-संहिता	,,	१०,०००
९—कोटिरुद्र-संहिता	,,	१०,०००
१०—सहस्रकोटिरुद्र-संहिता	,,	१०,०००
११—वायुप्रोक्त-संहिता	,,	४,०००
१२—धर्म-संहिता	,,	५,०००

इस हिसाब से शिवपुराण की बारह संहिताओं के श्लोकों की संख्या सब मिला कर एक लाख होती है। परन्तु आज कल के शिवपुराण में सिर्फ़ २४,००० ही श्लोक हैं। शायद किसी ज़माने में यह एक लाखवाला बड़ा शिवपुराण रहा हो; पर आज कल तो वह कहीं मिलता नहीं। अस्तु, प्रचलित शिवपुराण की छहों संहिताओं की अध्यायानुक्रम से विषय-सूची इस प्रकार है;—

१—ज्ञान-संहिता

१—सूत के प्रति ऋषियों का प्रश्न।

२—ब्रह्मा और नारद का संवाद तथा ज्योतिर्लिङ्ग की उत्पत्ति।

३—ओङ्कार की उत्पत्ति, शिव का शब्दमयत्व, ब्रह्मा और विष्णु के साथ शिव की बात-चीत।

४—शिव का प्रसाद, विष्णुकृत शिव की स्तुति, ब्रह्मा और विष्णु के प्रति शिव का वरदान।

५,६—ब्रह्मा का हंसरूप और विष्णु का वराहरूप धारण करने का कारण, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, सृष्टि-निरूपण के लिए ऋषियों की उत्पत्ति।

७—दाक्षायणी का देह-त्याग और शिव की पूजाविधि।

८—मन्त्रों के द्वारा शिव-पूजा-विधि।

९—ब्रह्मा के पास देवताओं का जाना।

१०—ब्रह्मा और देवताओं का संवाद और शिव के तप का वर्णन।

११—कामदेव का भस्म करना और पार्वती का फिर लौटना।

१२—पार्वती की तपस्या ।

१३—पार्वती की कठोर तपस्या से अचम्भे में होकर देवताओं और ऋषियों का शिव के पास जाना, ब्रह्मचारी का वेष धारण करके शिव का पार्वती के पास जाना और पार्वती से बातचीत।

१४—महादेव-पार्वती का संवाद ।

१५—शिव के विवाह का उद्योग ।

१६—शिव की बरात का हिमालयनगर में जाना ।

१७—शिव के विरूप को देख कर पार्वती की माता मेनका का खेद करना और पार्वती को ज्ञानोपदेश करना ।

१८-१९—पार्वती का विवाह, कार्त्तिक का जन्म, उनका देवताओं का सेनापति बनाना और तारक-वध ।

२०—त्रिपुर दैत्य के मारने के लिए विष्णु का उपाय करना।

२१—मुण्डन दैत्य को मोह पैदा करना ।

२२—विष्णु आदि देवों द्वारा शिव की स्तुति ।

२३—विश्वकर्मा के बनाये दिव्य रथ में चढ़ कर शिव का त्रपुर दैत्यको मारना ।

२४—देवताओं द्वारा शिवस्तुति और वर मिलना ।

२५—शिवलिङ्ग-पूजा-विधि ।

२६—देवताओं के प्रति ब्रह्मा का शिव-पूजा-विधि-वर्णन ।

२७—शिव-पूजा-विधि ।

२८—षोडशोपचार से शिव-पूजा की विधि।

२—विद्येश्वर-संहिता

५—तेजोमय शिवलिङ्ग का पैदा होना और उसे देख कर ब्रह्मा और विष्णु का झगड़ा शान्त होना ।

६—शिव के रचे हुए वैभव के द्वारा ब्रह्मा का सिर काटना और ब्रह्मा पर शिव का प्रसन्न होना ।

७—ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा शिव-पूजा ।

८—ब्रह्मा और विष्णु के प्रति शिव का ओङ्कार के स्वरूप का कथन ।

९—शिवलिङ्ग का बनाना, उसकी प्रतिष्ठा की विधि और मूर्ति-पूजा का वर्णन ।

१०—शिवक्षेत्र आदि सेवन का माहात्म्य ।

११—ब्राह्मणों का सदाचार और नित्यकर्म ।

१२—पञ्चमहायज्ञों का वर्णन ।

१३—देशभेद से पूजा का फल ।

१४—मिट्टी की मूर्त्ति की पूजा का विधान ।

१५-१८—ओङ्कार की महिमा, शिव-पूजाविधि, बन्धन और मोक्ष का वर्णन ।

१९—पार्थिवेश्वर-महिमा ।

२०—जैसी कामना वैसी पूजा की विधि ।

२१—शिव पर बेलपत्र चढ़ाने का माहात्म्य ।

२२, २३—भस्म के नाम और रुद्राक्ष-धारण-का माहात्म्य ।

२४—दो प्रकार की भस्म धारण करने की विधि ।

२५—रुद्राक्ष का माहात्म्य ।

३—कैलास-संहिता

१—काशी में मुनियों से सूतजी का ओङ्कार के अर्थ का वर्णन।

२—कैलास पर्वत पर बैठे हुए शिव से पार्वती का ओङ्कार का अर्थ पूछना।

३—प्रणव (ओङ्कार) का वर्णन।

४—प्रणव के अर्थ बतानेवाले मन्त्र के बनाने की विधि।

५—प्रणव का उद्धार और उसके पूजन की विधि।

६—शङ्ख-पूजा, गुरु-पूजा और शिव-पूजा का विधान।

७—गुह से वामदेव का ओङ्कार का अर्थ पूछना।

८—प्रणव की उपासना आदि का कथन।

९—प्रणव की उपासना और सन्न्यास-विधि।

१०—छः तरह के अर्थ का ज्ञान।

११—योगपट्ट आदि का वर्णन।

१२—संन्यासियों के लिए अन्त्येष्टि (मृतक-कर्म) कर्म का कथन।

४—सनत्कुमार-संहिता

१—नैमिष क्षेत्र में सनत्कुमार का आना, व्यास आदि मुनियों का इकट्ठा होना, ऋषियों का शिवपूजा-विषयक प्रश्न।

२—पृथिवी आदि के ठहरने की कथा।

३—जगत् की सृष्टि और सात द्वीपों का वर्णन।

४—नीचे के लोकों का वर्णन और नरक आदि का वर्णन।

५—ऊपर के लोकों का वर्णन और योग की महिमा ।

६—रुद्रमाहात्म्य और शिव की पाँचों मूर्त्तियों की कथा ।

७—रुद्र की स्तुति और उसका फल ।

८—सनत्कुमार का चरित और उनकी सिद्धि का वर्णन ।

९—सनत्कुमार का शिव आदि का वर्णन ।

१०—ब्रह्मलोक, विष्णुलोक और रुद्रलोक का वर्णन ।

११—रुद्र के सात स्थानों का कथन ।

१२—रुद्र के सर्वोत्तम स्थान का वर्णन ।

१३—विभीषण और शिव का संवाद ।

१४—शिव-पूजा और शिव के नाम-कीर्तन का फल ।

१५—स्थान-माहात्म्य-कथन ।

१६—तीर्थों की कथा ।

१७—तीर्थों का माहात्म्य ।

१८—ब्रह्मा, विष्णु और शिव में कौन बड़ा है इसका वर्णन ।

१९—शिवलिङ्ग के स्थापन करने का मुहूर्त्त ।

२०—शिव के प्रसन्न करनेवाली पूजा ।

२१—शिव पर चढ़नेवाले पुष्पों का वर्णन ।

२२—न खाने की विधि ।

२३—शिव के प्रसन्न करनेवाले काम ।

२४—लक्षणाष्टमी के व्रत की कथा ।

२५—अन्नदान आदि दानों की महिमा ।

२६—धर्म-कर्मों का उपदेश ।

२७—नियम-पालन का फल ।

२८—पार्वती के कहने से शिव का चन्द्र-मण्डल-धारण और विष-भोजन ।

२९—भस्म की प्रशंसा और उसके धारण का फल ।

३०—शिवपूजा और शिव के श्मशान-भूमि में रहने का कारण ।

३१—शिव की विभूतियों का वर्णन और शिवज्ञान का फल ।

३२—प्रणव की उपासना, का फल और देव-पूजन ।

३३—ध्यान का क्रम ।

३४—दुर्वासा के प्रति शिव का ध्यानयोग-कथन ।

३५—ध्यान का वर्णन, काशी-निवास की विधि ।

३६—वायुनाडिका आदि का वर्णन ।

३७—ध्यान की प्रशंसा ।

३८—प्राणायाम का लक्षण और प्रणव की उपासना ।

३९—शरीर में सब देवताओं के वास का कथन ।

४०—सनत्कुमार के द्वारा नाड़ी का वर्णन ।

४१—काशी-माहात्म्य ।

४२—हरिकेश गुह्यक की कथा ।

४३—मण्डूकी की कथा, प्रतापमुकुट नामक राजा का ओङ्कारेश्वर के दर्शन करने के लिए, पुत्रसहित, काशी में आना और ओङ्कारस्तुति ।

४४—ओङ्कारेश्वर का वर्णन ।

४५—ओङ्कारेश्वर-स्थान-निवासी पुष्पवाहन का इतिहास ।

४६—नन्दी की कठिन तपस्या का वर्णन।

४७—नन्दी को शिव का वरदान।

४८—महादेव के याद करते ही देवताओं का उनके पास आना।

४९—शिव की आज्ञा से नन्दी को गणपति बनाना और स्तुति-कथन।

५०—नन्दी का विवाह।

५१—नीलकण्ठ-माहात्म्य।

५२—त्रिपुर की कथा, देवगण की स्तुति से शिव का प्रसन्न होना।

५३—त्रिपुर के नाश का उद्योग, नारद के कहने से मय आदि का युद्ध करना।

५४—त्रिपुर-दाह।

५५—पार्वती के पूछने पर शिव का विप्र-माहात्म्य-कथन।

५६—सनत्कुमार का पाशुपत योग-कथन।

५७—देह की नाडियों का वर्णन।

५८—शुद्ध ज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का प्रकार।

५९—शिवलोक का वर्णन

५—वायवीय-संहिता

इस संहिता के दो भाग हैं। दोनों में तीस तीस अध्याय हैं। पूर्व-भाग के अध्यायों की कथा इस तरह है :—

१—महादेव की कृपा से कृष्ण के पुत्र होना, देव आदि का वर्णन और पुराणों की प्रशंसा।

२—ऋषियों का ब्रह्मा के पास जाकर शैवतत्त्व सुनना और ब्रह्मोक्त यज्ञ करने के लिए निमिष-क्षेत्र में जाना।

३—नैमिषारण्य में जाकर वायु से कुशल-मंगल पूँछना।

४—पाशुपत-तत्त्व, माया का स्वरूप-वर्णन।

५—शम्भु का कालरूप-कथन।

६—कालमान-कथन।

७—शक्ति आदि की सृष्टि का वर्णन।

८—प्रकृति से सृष्टि का वृत्तान्त।

९—ब्रह्मा का वाराह रूप में जन्म लेना और जगत् की स्थिति।

१०—शिव की कृपा से ब्रह्मा की जगत्-रचना।

११—ब्रह्मा, विष्णु और शिव का आपस में एक दूसरे के वश में रहना।

१२—रुद्रसृष्टि के बाद ब्रह्मा से और सृष्टि रचने के लिए कहना।

१३—ब्रह्मा के कहने से शिव की प्रजा की वृद्धि के लिए चेष्टा।

१४—शक्तिरूपिणी स्त्रियों की रचना।

१५—स्वायम्भुव आदि के द्वारा प्रजा की वृद्धि।

१६—दक्ष-यज्ञ की कथा में पितरों का दक्ष को शाप देना और सती का देहत्याग।

१७—दक्षयज्ञ-विध्वंस के लिए शिव का वीरभद्र और भद्र-काली को उत्पन्न करना ।

१८—दक्ष-यज्ञ-विध्वंस ।

१९—वीरभद्र के द्वारा विष्णु आदि का पराजय ।

२०—ब्रह्मा आदि के द्वारा वीरभद्र की स्तुति, देव आदि का शिव के समीप जाना, छागमुण्ड की कथा ।

२१—शुम्भ-निशुम्भ के वध के लिए गौरी का कौशिकी रूप धारण करना ।

२२—व्याघ्र के ऊपर पार्वती का अनुग्रह ।

२३—गौरी का शिव के पास जाना, व्याघ्र का सोमनन्दी नाम होना ।

२४—शिव-पार्वती-संवाद ।

२५—तीन तरह के शब्दों के अर्थ का वर्णन ।

२६—महर्षियों का शिवचरित्र-वर्णन ।

२७—ऋषियों के पूछने पर वायु का शिवतत्त्व और मुक्ति के कारण ज्ञान का उपदेश ।

२८—कर्मों के द्वारा पाशुपत योग में मुक्ति मिलने का वर्णन ।

२९—पाशुपत व्रत का वर्णन और भस्म की महिमा ।

३०—शिव-कृपा से ऋषिकुमार को क्षीरसमुद्र की प्राप्ति ।

उत्तर-भाग के अध्यायों की सूची इस प्रकार है :—

१—प्रयाग में मुनि और सूत का संवाद ।

२—श्रीकृष्ण के प्रति उपमन्यु का पाशुपत व्रत-कथन ।

३—सुरेन्द्र आदि की परीक्षा।

४—ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों को शिवरूप-कथन।

५—सारा जगत् पार्वती-महेश्वर के अंश से दो प्रकार का है—इसका वर्णन।

६—परा और अपरा के भेद से ब्रह्म के दोनों रूपों को एक ही वर्णन करना।

७—ओङ्कार का रूप-कथन।

८—सब देव-देवियों के प्रति, महादेव का वेदसार-कथन।

९, १०—शिव के ११२ अवतारों का वर्णन।

११—पार्वती के प्रति शिव का सब वर्णधर्मों का कथन।

१२—शिव के पाँच अक्षरवाले (*ओं नमः शिवाय*) मन्त्र का माहात्म्य।

१३—शिव-मन्त्र के ग्रहण करने का प्रकार।

१४—दीक्षाप्रयोग।

१५—शिवपूजा-विधि।

१६—शैवों के मन्त्र-साधन करने का प्रकार।

१७—अभिषेक आदि कराने का प्रकार।

१८—शिवभक्तों का नित्य कर्म।

१९—अन्तर्याग और बहिर्याग का वर्णन।

२०—कई प्रकार से शिव और पार्वती की पूजा।

२१—होमकुण्ड की नापतोल आदि।

२२—महीने महीने में शिवपूजा का विधान।

२३—शिवपूजा का क्रम।

२४—शिवस्तोत्र।

२५—और प्रकार से पूजा।

२६—शिवपूजा के फल से ब्रह्मा आदि को अपने अपने पद की प्राप्ति।

२७—ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा शिव के दर्शन की कथा।

२८—शिव की प्रतिष्ठा-विधि।

२९—योग का उपदेश।

३०—मुनियों के निकट शिव के चरित का वर्णन, वायु का छिप जाना, नन्दि का आना और नन्दि का शिवकथा-वर्णन।

६—धर्म-संहिता

१—शिवमाहात्म्य-कथन।

२—श्रीकृष्ण महाराज की शिवमन्त्रदीक्षा।

३—त्रिपुरदाह का वर्णन।

४—अन्धक दैत्य का वध।

५—शुक्र का शिवजी के पेट में जाना, शुक्र के प्रति देवी का प्रसन्न होना और अन्धक-सिद्धि।

६—रुरु नामक दैत्य का वध।

७—गौरी के वेष में अप्सराओं का महादेव के साथ विहार, ऊषा और अनिरुद्ध की कथा और बाणासुर का युद्ध।

८—कामतत्त्व-निरूपण।

९—काम के प्रकार।

१०—काली की तपस्या, आडि दैत्य का वृत्तान्त, वीर के नन्दि रूप में जन्म ग्रहण करने का हेतु, शिव की काम-कथा और शिव की उत्पत्ति।

११—देवताओं के साथ शिवकृत अनेक लीलायें।

१२—महात्मा लोगों की कथा।

१३—विश्वामित्र आदि की काम के जीतने की कथा।

१४—श्रीरामचन्द्रजी के कामाधीन होने की कथा।

१५—नित्यनैमित्तिक शिवपूजा की विधि।

१६—क्रियायोग और उसका फल-कथन।

१७—शिवभक्त की पूजा का फल।

१८—नाना प्रकार के पापों का कथन।

१९—पापों के फलों का वर्णन।

२०—धर्म की कथा।

२१—अन्नदान की विधि।

२२—जलदान, तप और पुराण के पढ़ने का माहात्म्य।

२३—धर्म के सुनने का फल।

२४—महादान का माहात्म्य और धर्मप्रसङ्ग।

२५—सुवर्णदान और पृथ्वीदान की कथा।

२६—हाथी के दान की कथा।

२७—एक दिन की पूजा से शिव के प्रसन्न हो जाने की कथा।

२८—शिव के सहस्र (हज़ार) नाम।

२९—धर्म का उपदेश और तुलापुरुष-दान।

३०—परशुराम की तुलादान की कथा ।

३१—ब्रह्माण्ड का वर्णन ।

३२—नरक आदि का वर्णन ।

३३—द्वीप-द्वीपान्तरों का वर्णन ।

३४—भारतवर्ष आदि का वर्णन ।

३५—ग्रह आदि की कथा और मृत्युञ्जय का उद्धार ।

३६—मन्त्रराज (मृत्युञ्जय) का प्रभाव ।

३७—पञ्चब्रह्म की कथा ।

३८—पञ्चब्रह्म का विधान ।

३९—तत्पुरुषविधान ।

४०—अघोर-कल्प, वामदेव-कल्प और सद्योजात आदि कल्प ।

४१—ब्राह्मणकार्य, संग्राम-माहात्म्य, युद्ध में मरे हुए प्राणियों का स्वर्ग-लाभ ।

४२—संसार-कथा ।

४३—स्त्रियों के स्वभाव आदि की कथा ।

४४—अरुन्धती और देवताओं का संवाद ।

४५—विवाह-कथा ।

४६—मृत्यु के चिह्न, आयु के प्रमाण आदि का कथन ।

४७—कालजय आदि की कथा ।

४८—छायापुरुष-लक्षण ।

४९—धार्मिक लोगों की गति का वर्णन ।

५०—विष्णुकृत शिव-स्तुति ।

५१—सृष्टिकथन ।

५२—ब्रह्मा-कृत संसार की रचना का वर्णन ।

५३—पृथु के पुत्र आदि की कथा ।

५४—दैत्यों और देवों की विस्तार-पूर्वक सृष्टिरचना ।

५५, ५६—अधिपति की कल्पना और अङ्गवंश की कथा ।

५७—राजा पृथु की कथा ।

५८—मन्वन्तरों की कथा ।

५९—संज्ञा और छाया की कथा ।

६०—सूर्यवंश का वर्णन ।

६१—सत्यव्रत और सगर आदि राजाओं की कथा ।

६२—पितृकल्प और श्राद्ध-कथन ।

६३—पितृसप्तक-वर्णन ।

६४—साधुओं के संग से लोगों की परमगति का लाभ ।

५—भागवत पुराण

भागवत दो हैं। एक श्रीमद्भागवत और दूसरा देवी-भागवत । विष्णु के भक्त श्रीमद्भागवत को पुराणों में गिनते हैं और देवी के भक्त देवीभागवत को। परन्तु हमें इन झगड़ों से कुछ मतलब नहीं। दोनों प्रकार के लोगों की प्रसन्नता के लिए हम यहाँ दोनों भागवतों का वर्णन किये देते हैं ।

पहले श्रीमद्भागवत का वर्णन सुनिए । इसमें बारह

स्कन्ध हैं। सब स्कन्धों में ३३५ अध्याय हैं। प्रत्येक स्कन्ध में क्रम से १६, १०, ३३, ३१, २६, १६, १५, २४, २४, ६०, ३१ और १३ अध्याय हैं।

पहला स्कन्ध।

१—मङ्गलाचरण, नैमिष क्षेत्र की कथा, ऋषियों का प्रश्न।

२—ऋषियों के प्रश्न का उत्तर और भगवद्वर्णन।

३—अवतार-कथा के प्रसङ्ग में भगवान् के चरित्रों का वर्णन।

३—तप करने पर भी चित्त की सन्तुष्टि न होने पर व्यासजी का भागवत बनाने का आरम्भ करना।

५—व्यासजी का चित्त प्रसन्न करने के लिए नारदमुनि-कृत भगवद्गुण-कीर्तन।

६—भगवान् के चरित-कीर्तन का अद्भुत फल।

७—भागवत के सुनने वाले राजा परीक्षित के जन्म की कथा और उनको गर्भ में ही मारने का उद्योग करने वाले अश्वत्थामा के दण्ड की कथा।

८,६—अश्वत्थामा के अस्त्र से श्रीकृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा, कुन्ती की स्तुति, राजा का दुःख-वर्णन, युधिष्ठिर के प्रति भीष्मजी का धर्म-कथन, भीष्म-कृत श्रीकृष्ण-स्तुति और उनकी मुक्ति।

१०,११—श्रीकृष्ण का हस्तिनापुर से द्वारिका को जाना और स्त्रियों की की हुई स्तुति।

१२—द्वारिकावासियों से प्रशंसित पुरी में श्रीकृष्ण का आना और उनकी प्रीति का वर्णन ।

१३—विदुर के कहने से धृतराष्ट्र का स्वर्ग जाने के लिए घर से निकल जाना ।

१४—बुरे बुरे शकुनों को देख कर युधिष्ठिर के जी में सन्देह का होना और अर्जुन के मुँह से श्रीकृष्ण के परमधाम सिधारने का कुसमाचार सुनना ।

१५—परीक्षित को राज्य का सब कारोबार सौंप कर राजा युधिष्ठिर का परलोकगमन ।

१६—राजा परीक्षित के पास कलियुग के सताये हुए धर्म और पृथिवी के आने की कथा ।

१७—परीक्षित-कृत कलिनिग्रह ।

१८—राजा परीक्षित को ऋषि का शाप और वैराग्य होना ।

१९—गङ्गा किनारे शरीर छोड़ने के लिए राजा परीक्षित का मुनियों के साथ आना और उनके पास श्रीशुकदेव जी का आना ।

दूसरा स्कन्ध ।

१—भगवान् के गुण-कीर्तन, श्रवण आदि की महिमा ।

२— विष्णु की भक्ति की महिमा ।

३—विष्णु की भक्ति की कथा सुन कर राजा परीक्षित की भगवद्धर्म-श्रवण में अधिक रुचि ।

४—श्रीहरिचेष्टित सृष्टिविषय में राजा परीक्षित का प्रश्न, ब्रह्म-नारद-संवाद में उत्तर देने के लिए शुकदेव का मङ्गलाचरण।

५—नारद के पूछने पर हरिलीला और विराट्-सृष्टि का वर्णन।

६—विराट् पुरुष की विभूति का वर्णन और पुरुषसूक्त द्वारा ब्रह्मरूप-वर्णन।

७—नारद के प्रति ब्रह्मा का भगवल्लीला-कथन।

८—राजा परीक्षित का पुराण के अर्थ के विषय में प्रश्न।

९—परीक्षित के प्रश्न का उत्तर और शुकदेव के द्वारा भागवत-धर्म-कथन।

१०—भागवत की कथा का आरम्भ।

तीसरा स्कंध।

१—विदुर और उद्धव का संवाद।

२—श्रीकृष्ण के वियोग से दुखी उद्धव का विदुर के पास जाकर श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

३—उद्धव द्वारा श्रीकृष्ण का मथुरा जाना, कंस को मारना और द्वारिका का वर्णन।

४—भाईबन्धों का मरना सुनकर ज्ञान की बातें सुनने की इच्छा से, उद्धव के कहने से विदुर का मैत्रेय के पास जाना।

५—विदुर के पूछने पर मैत्रेय का भगवल्लीला और सृष्टि का कथन और श्रीकृष्णस्तुति।

६—विराट् पुरुष की सृष्टि की कथा।

७—मैत्रेय के प्रति विदुर के अनेक प्रश्न ।

८—जलशायी नारायण की नाभि के कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति ।

९—संसार के रचने की इच्छा से ब्रह्मा का नारायण की स्तुति करना और नारायण का प्रसन्न होना ।

१०—दस तरह की सृष्टि का वर्णन ।

११—परमाणु से लेकर काल-वर्णन, युग और मन्वन्तरों का परिमाण ।

१२—ब्रह्मा की सृष्टि

१३—वाराह अवतार के द्वारा जल में डूबी हुई पृथ्वी का उद्धार और हिरण्याक्ष दैत्य का वध ।

१४—कश्यप से दिति के गर्भ-स्थिति ।

१५—ब्रह्मा के द्वारा वैकुण्ठ-वासी नारायण के सेवकों को शाप मिलने का वर्णन ।

१६—भगवान् का उन दुखी ब्राह्मणों को समझाना, उन दोनों सेवकों पर भगवान् का अनुग्रह करना और शाप के कारण वैकुण्ठ से उनका गिरना ।

१७—उन दोनों सेवकों का पृथ्वी पर राक्षस बन कर जन्म लेना, और हिरण्याक्ष का अद्भुत प्रभाव ।

१८—वाराह और हिरण्याक्ष का घोर युद्ध ।

१९—ब्रह्मा के प्रार्थना करने पर विष्णु का हिरण्याक्ष को मारना ।

२०—मनुवंश का विस्तारपूर्वक कथन करने के लिए सृष्टि का वर्णन ।

२१, २२—मनु की कन्या देवहूति के साथ कर्दम ऋषि का विवाह ।

२३—विमान पर बैठकर देवहूति और कर्दम का आनन्द-विहार ।

२४—देवहूति के गर्भ से कपिल का जन्म ।

२५—माता की आज्ञा से कपिल का भक्ति-विषयक उपदेश ।

२६—प्रकृति और पुरुष की व्याख्या में सांख्यतत्त्व का वर्णन ।

२७—मोक्ष की रीति का वर्णन ।

२८—ध्यान में योग के द्वारा आत्मस्वरूप का ज्ञान ।

२९—भक्तियोग, वैराग्य पैदा करने के लिए संसार की असारता ।

३०—कुटुम्ब-परिवार में फँसे हुए कामी जनों की तामसी गति का वर्णन ।

३१—पाप और पुण्य दोनों के मेल से रजोगुणी मनुष्य की योनि की प्राप्ति का वर्णन ।

३२—धर्म करनेवाले सात्त्विक जनों के, ऊपर के लोकों की प्राप्ति का वर्णन और तत्त्वज्ञानहीन जन का संसार में फिर जन्म लेना ।

३३—कपिल भगवान् के उपदेश से देवहूति को ज्ञानलाभ और जीवन्मुक्ति ।

चौथा स्कन्ध ।

१—मनु की कन्याओं के वंश का अलग अलग वर्णन ।

२—शिव और दक्ष का आपस में वैर भाव।

३—अपने पिता दक्ष का यज्ञोत्सव देखने के लिए सती का हठ।

४—शिव का कहना न मान कर, सती का पिता के घर आना और पिता के अपमान से सती का देहत्याग।

५—सती का मरना सुन कर शिव का क्रोध और वीरभद्र की उत्पत्ति, उसके द्वारा दक्ष-वध।

६—दक्ष को जिला देने के लिए देवताओं का शिव को प्रसन्न करना।

७—दक्ष और शिव के स्तुति करने से भगवान् विष्णु का प्रकट होना और उनकी सहायता से दक्ष का यज्ञ पूर्ण होना।

८—अपनी मौसी के तिरस्कार से क्रोध में भर कर निकले हुए ध्रुव की तपस्या और भगवान् का प्रसन्न होना।

९—भगवान् से वर प्राप्त कर ध्रुव का नगर में आना और राज्य भोगना।

१०—ध्रुव के पराक्रम का वर्णन।

११—यक्षों के साथ ध्रुव का घोर युद्ध, यक्षों का विध्वंस देख कर मनु का रणभूमि में आना और ध्रुव को युद्ध से शान्त करना।

१२—यक्षों पर विजय पाकर ध्रुव का घर लौट आना और यज्ञ करना और अन्त में सबसे ऊपर के लोक में गमन।

१३—ध्रुव के वंश में पृथु के जन्म की कथा और वेन के पिता अङ्ग का वृत्तान्त।

१४—राजा अङ्ग का राजपाट छोड़ वन में जाकर भजन करना, ब्राह्मणों का वेन को राजगद्दी पर बैठाना, वेन का चरित, और अधर्मी वेन का ब्राह्मणों के हाथ से मारा जाना ।

१५—ब्राह्मणों के द्वारा वेन की भुजाओं से पृथु के जन्म की अद्भुत कथा, और उन को राजा बनाना ।

१६—स्त्रीसहित राजा पृथु की प्रजा-कृत स्तुति ।

१७—प्रजा को दुखी देख कर राजा पृथु का पृथ्वी पर कोप, पृथ्वी का प्रसन्न होकर दोहन का वर देना ।

१८—गोरूपिणी पृथ्वी का दोहन करना और ऊँची नीची धरती को जोतने बोने लायक़ बराबर करना ।

१९—पृथु-कृत अश्वमेध यज्ञ, यज्ञ का घोड़ा हर ले जाने वाले इन्द्र के वध के लिए पृथु का उद्योग, ब्रह्मा द्वारा ऐसा करने से रोका जाना ।

२०—यज्ञ में प्रसन्न होकर भगवान् का पृथु को उपदेश, और पृथु-कृत उनकी स्तुति ।

२१—पृथु की दुखी प्रजा को समझाना और धर्म से प्रजा-पालन ।

२२—पृथु के प्रति सनत्कुमार का ज्ञानोपदेश ।

२३—स्त्रीसहित पृथु का वन को जाना और समाधि द्वारा परलोकगमन ।

२४—पृथु के वंश की कथा, प्रचेता आदि की उत्पत्ति और उनको शिवजी के द्वारा रुद्रगीता का उपदेश ।

२५—प्रचेतागणों को तपस्या में लगे देख कर उनके पिता

प्राचीनबर्हि के पास नारद मुनि का आना और पुरञ्जन की कथा कह कर संसार में प्रवृत्ति दिलाना ।

२६–पुरञ्जन को शिकार खेलने की कथा के बहाने सोने और जागने की दशा का वर्णन ।

२७–स्त्री-पुत्र आदि में मन लगाने के कारण पुरञ्जन का ईश्वर से विमुख होना, गन्धर्वयुद्ध, कालकन्या की कथा के द्वारा बुढ़ापे और बीमारी का वर्णन ।

२८–पुरञ्जन का देहत्याग, स्त्री की चिन्ता अधिक रहने के कारण स्त्री-शरीर की प्राप्ति, ज्ञान के उदय से भक्ति का होना ।

२९–ऊपर की कथा का सार निकाल कर संसार और उससे मुक्त होने का वर्णन ।

३०–तप करने से भगवान् का प्रचेतागणों पर प्रसन्न होना और फिर उनका विवाह करना, राज्य भोगना और सन्तान पैदा करना ।

३१–दक्ष को राज्य सौंप कर प्रचेताओं का वनगमन, और नारद की कही हुई मुक्ति का वर्णन ।

पाँचवाँ स्कन्ध ।

१—प्रियव्रत की कथा ।

२, ३—आग्नीध्र-चरित, आग्नीध्र का पूर्वचित्ति नाम की अप्सरा में पुत्र पैदा करना, उस नाभि नामक पुत्र का मङ्गल-चरित । यज्ञ से प्रसन्न होकर भगवान् का नाभि का पुत्र होना स्वीकार करना ।

४—नाभि से मेरुदेवी के गर्भ से भगवान् ऋषभ का जन्म और उसके राज्य भोगने का वर्णन ।

५—ऋषभ का अपने पुत्रों को मोक्षमार्ग का उपदेश देना ।

६—ऋषभ का परलोक-गमन ।

७—राजा भरत का विवाह, भगवद्भजन, सब कामों में भगवान् की पूजा ।

८—ईश्वर के परम भक्त भरत को हिरन से प्रीति करने के कारण दूसरे जन्म में मृगरूप मिलना और मृत्यु को प्राप्त होना ।

९—कर्मानुसार तीसरे जन्म में भरत का जड़रूप ब्राह्मण होना ।

१०—जड़भरत और राजा रहूगण की कथा ।

११—रहूगण के प्रति जड़भरत का ज्ञानोपदेश ।

१२—रहूगण का जड़भरत से अपने सन्देह दूर करना ।

१३—रहूगण के वैराग्य को पक्का करने के लिए जड़भरत का 'भवाटवी' वर्णन ।

१४—रूपकालङ्कार में वर्णित 'भवाटवी' का स्पष्ट वर्णन ।

१५—जड़भरत के वंश का वर्णन ।

१६—प्रियव्रत का चरित्र, द्वीप-द्वीपान्तरों का वर्णन, परीक्षित का शुकदेवजी से प्रश्न, जम्बूद्वीप-कथन, मेरु पर्वत का वर्णन ।

१७—इलावृत वर्ष के चारों ओर गङ्गा का जाना ।

१८—सुमेरु पर्वत के चारों ओर का वर्णन ।

१९—किंपुरुष-वर्ष और भारतवर्ष का और उसके सर्वोत्तम होने का वर्णन ।

२०—समुद्र सहित छहों द्वीप, सबकी लंबाई चौड़ाई, और लोकालोक पर्वत का वर्णन ।

२१—सूर्य की गति, राशिसंचार. इत्यादि का वर्णन ।

२२—खगोल में चन्द्रमा और शुक्र के रूप का वर्णन ; और उनकी गति के अनुसार मनुष्यों पर शुभाशुभ फलों का मिलना ।

२३—ज्योतिश्चक्र का वर्णन, ध्रुवलोक का वर्णन, शिशुमार-चक्र का वर्णन ।

२४—सूर्य के नीचे रहने वाले राहु का वर्णन, नीचे के लोकों का वर्णन, और उनमें रहनेवाले प्राणियों की कथा ।

२५—पातालवासी शेषनाग का वर्णन ।

२६—दक्षिण दिशा में सब नरकों का वर्णन और वहाँ जानेवाले पापियों की कथा ।

छठा स्कन्ध ।

१—विष्णु के और यम के दूतों की बातचीत, धर्म-निरूपण ।

२—यमदूतों को राम-नाम की अद्भुत महिमा सुना कर विष्णु-दूतों का अजामिल को वैकुण्ठ ले जाना ।

३—यमराज का अपने दूतों को समझाना और यह कहना कि तुम लोग भगवद्भक्त को मत पकड़ा करो ।

४—प्रजा की रचना करने के लिए दक्ष का हरिभजन ।

५—नारद मुनि का दक्ष की सन्तान को संसार-जाल से छुड़ा कर मुक्तिमार्ग में लगाना । दक्ष का नारद को शाप ।

६—दक्ष की ६० कन्याओं के जन्म की कथा ।

७—इन्द्र के द्वारा देवगुरु-बृहस्पति का अपमान और बृहस्पति का देवों की पुरोहिताई छोड़ना ।

८—नये पुरोहित विश्वरूप द्वारा इन्द्र को नारायण-कवच का उपदेश ।

९—वृत्रासुर की कथा ।

१०—इन्द्र और वृत्रासुर का युद्ध ।

११—वृत्रासुर का युद्ध के लिए देवों को ललकारना ।

१२—इन्द्र का वृत्रासुर के साथ घोर युद्ध और वृत्र-वध ।

१३—वृत्र की हत्या के पाप से इन्द्र का दुखी होना और उस पाप के दूर करने का उपाय ।

१४—ईश्वर में वृत्रासुर की भक्ति होने का कारण ।

१५—चित्रकेतु की कथा ।

१६—चित्रकेतु को नारद मुनि का उपदेश ।

१७—पार्वती के शाप से चित्रकेतु का वृत्रासुर बनना ।

१८—इन्द्र के द्वारा दिति के गर्भ के उनचास टुकड़े करना ।

१९—दिति के पुंसवन व्रत की कथा ।

सातवाँ स्कन्ध ।

१—हिरण्यकशिपु दैत्य और उसके पुत्र प्रह्लाद के पहले जन्म की कथा ।

२—अपने भाई हिरण्याक्ष के मारे जाने पर क्रुद्ध होकर हिर-

ण्यकशिपु का सारे संसार को दुखी करना, हिरण्यकशिपु का सब दैत्यों से यह कहना कि 'तुम साधु लोगों को खूब सताओ'।

३—हिरण्यकशिपु के कठिन तप को देख कर ब्रह्मा का आना और उसको वर देना।

४—वर पाकर हिरण्यकशिपु का सब लोकों को जीतने की इच्छा करना और भगवान् के भक्तों को दुखी करना, सताना।

५—गुरु के उपदेश को न मान, प्रह्लाद का ईश्वर-भजन, ऐसे भक्तशिरोमणि प्रह्लाद को मरवाने के लिए साँप और हाथियों आदि द्वारा अनेक यत्न।

६—अपने साथी बालकों के प्रति प्रह्लाद का ज्ञानोपदेश।

७—नारद के कहे हुए उपदेश सब दैत्य-पुत्रों को सुनाना।

८—प्रह्लाद को मारने का उद्योग करनेवाले हिरण्यकशिपु का नरसिंह भगवान् के हाथ से मारा जाना।

९—नरसिंह भगवान् के क्रोध को शान्त करने के लिए प्रह्लाद का हाथ जोड़ कर स्तुति करना।

१०—नरसिंहजी का प्रह्लाद पर प्रसन्न होना और छिप जाना।

११—मनुष्य-धर्म, आश्रम-धर्म और स्त्री-धर्म का वर्णन।

१२—ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और चारों आश्रमों के धर्मों का वर्णन।

१३—संन्यासी का धर्म, एक परमहंस की कथा, सिद्धों की दशा का वर्णन।

१४,१५—गृहस्थ-धर्मों का वर्णन, देश, काल के भेद से धर्मों का वर्णन, मोक्ष का लक्षण।

आठवाँ स्कन्ध।

१—स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम और तामस इन चार मनुओं का वर्णन।

२—गजेन्द्र-मोक्ष का वर्णन। हाथी और ग्राह की लड़ाई, हाथी का दुखी होकर भगवान् को याद करना।

३—भगवान् का प्रसन्न होकर हाथी को बचाना।

४—ग्राह और गजेन्द्र दोनों का अपने अपने शाप से छूटना, ग्राह का गन्धर्व बनना और गजेन्द्र का विष्णुपार्षद।

५—पाँचवें और छठे मनुओं की कथा।

६—देवों और दैत्यों का मिल कर अमृत निकालने का उद्योग।

७—समुद्र-मथन में विष का निकलना, उसे महादेव को पिलाना।

८—समुद्र से लक्ष्मी का निकलना, उसका विष्णु के पास जाना, धन्वन्तरि का अमृत लेकर आना, और विष्णु का मोहिनी रूप धारण करना।

९—मोहिनी-रूप से मोहित होकर दैत्यों का उसके हाथ में अमृत का घड़ा दे देना और दैत्यों को छल कर चाल से उसका देवताओं को ही अमृत पिलाना।

१०—अमृत न मिलने के कारण दैत्यों का देवों के साथ घोर संग्राम और देवों को दुखी देख कर भगवान् विष्णु का प्रकट होना।

११—मरे हुए दैत्यों का शुक्राचार्य द्वारा फिर जिलाया जाना ।

१२—मोहिनी रूप भगवान् के द्वारा महादेव को मोह होना ।

१३—वैवस्वत आदि मन्वन्तरों का वर्णन ।

१४—मनु आदि के कर्तव्यों का वर्णन ।

१५—वलि का यज्ञ करना और स्वर्ग को जीतना ।

१६—देवमाता अदिति का शोक और कश्यप का उपदेश ।

१७—कश्यप के बताये हुए पयोव्रत से अदिति की इच्छा-पूर्त्ति, उसके पुत्र होने की भगवान् की प्रतिज्ञा ।

१८—वामनरूप धारण करके भगवान् का राजा वलि के यज्ञ में जाना, वलि का वामन को वरदान ।

१९—वामन का वलि से तीन पैर पृथ्वी माँगना, वलि का देना स्वीकार करना, शुक्र का वलि को दान देने से रोकना ।

२०—वलि का अपने धर्म से न हटना, वामन का विराट् रूप लेना ।

२१—वलि का बन्धन ।

२२—वामन भगवान् का वलि के द्वारपाल हो कर पाताल जा बसना ।

२३—वलि के पाताल चले जाने पर देवताओं को आनन्द ।

२४—मत्स्य भगवान् की लीलाओं का वर्णन ।

नवाँ स्कन्ध ।

१—वैवस्वत मनु के पुत्र के वंश-वर्णन में इलोपाख्यान ।

२—मनु के करूषक आदि पाँच पुत्रों का वर्णन।

३—सुकन्या की कथा और शर्याति का वंश-वर्णन।

४—अम्बरीष की कथा।

५—अम्बरीष-वंश की कथा में शशाद से लेकर मान्धाता तक वर्णन।

६—मान्धाता के जामाता सौभरि की कथा।

७—मान्धाता के वंशज पुलकुत्स और हरिश्चन्द्र की कथा।

८—रोहित का वंश-वर्णन और कपिल भगवान् के शाप से सगर के पुत्रों का नाश।

९, १०—खट्वाङ्ग के वंश में महाराजा रामचन्द्रजी का जन्म और रावण के मारने आदि का कुल हाल।

११—रावण आदि को मारकर रामचन्द्रजी का अयोध्या में राज्याभिषेक और अश्वमेध यज्ञ करना।

१२—कुश और इक्ष्वाकु के पुत्र शशाद के कुल का वर्णन।

१३—निमि का वंश-वर्णन।

१४—बृहस्पति की स्त्री तारा में चन्द्रमा के द्वारा बुध का जन्म।

१५—ऐल के वंश में गाधि का जन्म, परशुराम द्वारा कार्तवीर्य अर्जुन का वध।

१६—परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि का मारा जाना और पिता के मरने के क्रोध से परशुराम का बार बार क्षत्रियों का संहार करना और विश्वामित्र के वंश की कथा।

१७—आयु के पाँच पुत्रों की कथा, उनमें से चारों का वंश-वर्णन ।

१८—नहुष के पुत्र ययाति की कथा ।

१९—ययाति का वैराग्य ।

२०—दुष्यन्त-तनय भरत की कीर्ति-कथा ।

२१—भरत के वंश का वर्णन, रन्तिदेव और अजमीढ आदि का वर्णन ।

२२—दिवोदास की कथा, ऋक्षवंशीय राजा, जरासन्ध, दुर्योधन, युधिष्ठिर आदि कौरव-पाण्डवों का वर्णन ।

२३—अनुद्रुह्यु और तुर्वसु की वंश-कथा, ज्यामघ की उत्पत्ति, यदु-वंश की कथा ।

२४—बलदेव और कृष्णचन्द्र की उत्पत्ति और विदर्भ के वंश की कथा ।

दसवाँ स्कन्ध ।

१—अपनी बहन देवकी के पुत्र से अपनी मृत्यु होने का वृत्तान्त सुनकर कंस का उसके छः बालकों का मारना ।

२—कंस के मारने के लिए देवकी के गर्भ में श्रीकृष्ण का आना और देवताओं की स्तुति ।

३—श्रीकृष्ण का जन्म और वसुदेव का उन को गोकुल में पहुँचाना ।

४—कंस को डर और बालकों के मारने के लिए उद्योग ।

५—नन्द के घर पुत्रोत्सव और नन्द का मथुरा में आना और वसुदेव से मिलाप ।

६—पूतना-वध ।

७—शकटासुर-वध की कथा, तृणावर्त्त-वध आदि अद्भुत लीलाओं का वर्णन ।

८—श्रीकृष्ण और बलदेवजी का नामकरण-संस्कार, छल से श्रीकृष्ण का मिट्टी खाना और मुँह बाकर उसमें सारे संसार का दर्शन ।

९—श्रीकृष्ण का दही-मक्खन खाना और ओखली से बँधना ।

१०—श्रीकृष्ण द्वारा यमलार्जुन का वृक्ष-योनि से छुड़ाना और श्रीकृष्ण की स्तुति ।

११—वृन्दावन में जाकर श्रीकृष्ण का गोपालन, वत्सासुर और बकासुर का वध ।

१२—सर्प का रूप बनाये हुए अघासुर का वध ।

१३—ब्रह्मा के द्वारा गोपों और गाय-बछड़ों का हरण और श्रीकृष्ण द्वारा वैसी ही सब चीज़ें रचकर साल भर तक इसी तरह रहना ।

१४—श्रीकृष्ण की अद्भुत लीला से मोहित होकर ब्रह्मा का भगवान् की स्तुति करना ।

१५—धेनुकासुर-वध, कालिय-नाग-दमन और उससे गोपों की रक्षा ।

१६—यमुना के दह में कालिय-दमनलीला ।

१७—यमुना-दह से कालिय का चला जाना ।

१८—श्रीकृष्ण और बलदेवजी के हाथ से प्रलम्बासुर का वध ।

१९—मुंजवन में गोपों और गायों की अग्नि से रक्षा करना ।

२०—वर्षा और शरद समय का वर्णन, गोपों के साथ रामकृष्ण की अनेक लीलायें ।

२१—श्रीकृष्ण का वृन्दावन में जाना और उनकी वंशी की तान सुनकर गोपियों का मोहित होकर गीत गाना ।

२२—वस्त्रहरण-लीला ।

२३—गोपों का इन्द्रयज्ञ करना ।

२४—इन्द्रयाग रोककर गोवर्धन की पूजा कराना ।

२५—इन्द्र का कोप और मूसलाधार पानी बरसाना, श्रीकृष्ण-कृत गोवर्धनधारण-लीला ।

२६—श्रीकृष्ण की अद्भुत लीला देखकर गोपों का अचम्भा करना ।

२७—श्रीकृष्ण का अद्भुत प्रभाव देखकर इन्द्र के द्वारा कृष्णस्तुति ।

२८—गोपों को वैकुण्ठ का दर्शन कराना ।

२९—रासलीला का आरम्भ ।

३०—उन्मत्त होकर गोपियों का श्रीकृष्ण को ढूँढ़ना ।

३१—श्रीकृष्ण-लीलाओं का गान और उनके आने की बाट देखना ।

३२—श्रीकृष्ण का प्रकट होना और गोपियों को उपदेश ।

३३—गोपियों के मण्डल के बीच में खड़े होकर श्रीकृष्ण की क्रीड़ा।

३४—गोकुल में श्रीकृष्ण-यशोगान।

३५—अरिष्ट दैत्य का वध।

३६—नारद के कहने से राम और कृष्ण को वसुदेव के पुत्र समझ कर उनके मारने के लिए कंस की सलाह, कृष्ण के बुलाने के लिए अक्रूर को भेजना।

३७—केशी और व्योम नामक असुरों का नाश।

३८—अक्रूर का गोकुल जाना और श्रीकृष्ण से मिलना।

३९—अक्रूर के साथ श्रीकृष्ण का मथुरा को जाना।

४०—श्रीकृष्ण को विष्णु समझ कर अक्रूर का स्तुति करना।

४१—श्रीकृष्ण का मथुरा की सैर करना, धोबी को मारना।

४२—कुब्जा का कुब्ज दूर करना।

४३—कंस के द्वारपालों को मारना, मस्त हाथी को मारना, और मल्लयुद्ध में राम-कृष्ण के साथ चाणूर मल्ल की बातचीत।

४४—कंस के मल्लों को मारकर फिर कंस को मारना, कंस की स्त्री को समझाना और राम-कृष्ण का अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव से मिलना।

४५—श्रीकृष्ण के द्वारा कंस के मारे जाने पर उसके पिता उग्रसेन को राजतिलक।

४६—उद्धव को व्रज में भेजना, श्रीकृष्ण द्वारा नन्द और यशोदा को समझाना।

४७—श्रीकृष्ण की आज्ञा से व्रज में जाकर उद्धव का गोपियों को समझाना।

४८—कुब्जा का मनोरथ पूरा करना, अक्रूर की मनोरथ-सिद्धि और पाण्डवों को समझाना।

४९—अक्रूर का हस्तिनापुर में जाकर युधिष्ठिर के सब समाचार मालूम करना और आकर सब कथा श्रीकृष्ण को सुनाना।

५०—जरासन्ध के डर से श्रीकृष्ण का पलायन और समुद्र में क़िला बनाकर उसमें जा छिपना। जरासन्ध-वध।

५१—मुचुकुन्द के द्वारा कालयवन का वध।

५२—रुक्मिणी के भेजे हुए ब्राह्मण द्वारा रुक्मिणी के स्वयंवर-विवाह का समाचार सुन कर श्रीकृष्ण का विदर्भ नगर को जाने की तैयारी करना।

५३—रुक्मिणी-हरण।

५४—द्वारका में आकर रुक्मिणी के साथ विधि-पूर्वक विवाह करना।

५५—रुक्मिणी के प्रद्युम्न का जन्म। शम्बर दैत्य के द्वारा प्रद्युम्न का पकड़ा जाना और प्रद्युम्न के हाथ से शम्बर का वध।

५६—श्रीकृष्ण का मणि-हरण, स्यमन्तक मणि की कथा।

५७—शतधन्वा-वध, अक्रूर द्वारा मणि-हरण।

५८—श्रीकृष्ण के और विवाह ।

५६—भौमासुर का मारा जाना ।

६०—श्रीकृष्ण के हँसी करने से रुक्मिणी का रुष्ट होना और श्रीकृष्ण का उनको समझाना ।

६१—श्रीकृष्ण की और कितनी ही सन्तानों का होना । श्रीकृष्ण की सोलह हज़ार एक सौ आठ (१६१०८) स्त्रियों से पैदा हुए पुत्रों का वर्णन, और अनिरुद्ध के विवाह में बल-देवजी के हाथ से रुक्मिणी के भाई रुक्मी का वध ।

६२—ऊषा और अनिरुद्ध के विवाह की कथा के प्रसंग में यादवों और बाण का युद्ध। युद्ध में बाणासुर की भुजा का छेदन ।

६३—श्रीकृष्ण की स्तुति ।

६४—नृग का शाप-मोचन ।

६५—बलदेवजी की लीलाओं का वर्णन ।

६६—काशी में आकर पौंड्रक और काशीराज का वध ।

६७—बलदेवजी के द्वारा द्विविद वानर का वध ।

६८—लड़ाई में साम्ब का कौरवों के हाथ पकड़ा जाना और उसे छुड़ाने के लिए बलदेवजी का हस्तिनापुर जाना ।

६६—नारद मुनि के द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति ।

७०—श्रीकृष्ण और नारद की बातचीत ।

७१—उद्धव की सलाह से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) जाना ।

७२—श्रीकृष्ण और भीमसेन के द्वारा जरासन्ध-वध ।

७३—जरासन्ध के बन्धन से और राजाओं को छुड़ाना ।

७४—युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ। उसमें पहले पूजन होने के कारण श्रीकृष्ण पर शिशुपाल का कोप। श्रीकृष्ण के हाथ से शिशुपाल का वहीं मारा जाना।

७५—युधिष्ठिर की सभा का वर्णन और दुर्योधन का मानभंग।

७६—यादवों और शाल्व का घोर युद्ध। द्युमान् की गदा के लगने से अनिरुद्ध का युद्ध से भाग जाना।

७७—श्रीकृष्ण के हाथ से शाल्व का मारा जाना।

७८—दन्तवक्त्र और विदूरथ-वध। बलदेवजी के द्वारा सूतजी का मारा जाना।

७९—सूत की हत्या को दूर करने के लिए बलदेवजी की तीर्थयात्रा।

८०—श्रीदामा (सुदामा) की कथा।

८१—सुदामा के तन्दुल चाब कर श्रीकृष्ण का उनको महाधनाढ्य बनाना।

८२—सूर्यग्रहण के समय श्रीकृष्ण का कुरुक्षेत्र-गमन और वहाँ जाकर राजा लोगों से बातचीत।

८३—द्रौपदी से श्रीकृष्ण की स्त्रियों का अपने अपने ब्याह की कथा कहना।

८४—मुनियों से भेट और वसुदेव आदि का अपने घर जाना।

८५—माता-पिता के कहने से श्रीकृष्ण और बलदेव का

अपने माता-पिता को ज्ञान-दान और मरे हुए बालकों को लाकर अपनी माता को सौंपना ।

८६—सुभद्रा-हरण श्रीकृष्ण का जनकपुरी में जाना, वहाँ एक ईश्वरभक्त राजा और ब्राह्मण को सद्गति-प्रदान ।

८७—नारद और भगवान् की बातचीत । वेद द्वारा नारायण-स्तुति ।

८८—विष्णु-भक्त की मुक्ति ।

८९—भृगु का और मुनियों से विष्णु की प्रशंसा करना ।

९०—संक्षेप से फिर श्रीकृष्ण-लीला और यदुवंश का वृत्तान्त ।

ग्यारहवाँ स्कन्ध ।

१—यदुवंश का विध्वस करने के लिए मूसल के पैदा होने की कथा ।

२—नारद, निमि और जयन्त की कथा ।

३, ४—मुनियों की माया, उससे छुटकारा, ब्रह्म और कर्म—इन चार बातों का उत्तर ।

५—युग युग में भक्ति-हीन लोगों की कथा ।

६—वैकुण्ठ में जाने के लिए कृष्ण से उद्धव की प्रार्थना ।

७—उद्धव को ज्ञान पैदा करने के लिए परमहंस का इतिहास । आठ गुरुओं का वर्णन ।

८—अवधूत-इतिहास के प्रसंग में श्रीकृष्ण द्वारा अवधूत-शिक्षा ।

९—कुरर आदि गुरुओं से शिक्षा ।

१०—चौबीस प्रकार के गुरुओं की कथा सुनकर उद्धव का ईश्वरतत्त्वज्ञान, देहसम्बन्ध-विचार और आत्मा संसार नहीं है, उससे भिन्न है—इसका वर्णन।

११—भक्त, मुक्त साधु और भक्त का लक्षण।

१२—सत्सङ्ग की महिमा, कर्मानुष्ठान, कर्मों के छोड़ने की व्यवस्था।

१३—सत्य गुण के उदय से ज्ञान का प्रकाश। हंस का इतिहास।

१४—भक्ति का साधन। साधना के साथ ध्यानयोग।

१५—विष्णुपद की प्राप्ति का वाहरी साधन। अणिमा आदि आठ सिद्धियों का वर्णन।

१६—हरि के अवतारों की विभूति का वर्णन।

१७—ब्रह्मचारी और गृहस्थों की भक्ति का लक्षण। परमहंसों के धर्मों का वर्णन।

१८—वानप्रस्थ और संन्यासी का धर्म।

१९—ज्ञान की कथा।

२०—अधिकारी के विशेष गुण और दोष की व्यवस्था। भक्तियोग।

२१—ज्ञान-योग और क्रिया-योग। क्रिया, ज्ञान और भक्ति में अधिकारी कामासक्त जीवों के लिए गुणदोष-व्यवस्था।

२२—तत्त्वसंख्या का विरोध-परिहार। प्रकृति और पुरुष का ज्ञान। जन्म-मरण का वर्णन।

२३—भिक्षु-गीता । अपमान सहने का उपाय । बुद्धि द्वारा मन का रोकना ।

२४—आत्मा और अन्य सब पदार्थों की उत्पत्ति और नाश । सांख्ययोग-निरूपण और मन का मोहनाश ।

२५—सत्त्वादि गुणों का वर्णन ।

२६—कुसंग से योगमार्ग में रुकावट । कुसंग से बचने के लिए ऐल-गीत का वर्णन ।

२७—क्रियायोग का वर्णन । परमार्थ का निर्णय । ज्ञानयोग का वर्णन ।

२८,२९—भक्तियोग का फिर वर्णन । योग का सरल उपाय ।

३०—मूसल की उत्पत्ति । श्रीकृष्ण की वैकुण्ठ जाने की इच्छा । उस मूसल से यदुवंश का संहार ।

३१—यदुवंश को मार कर फिर देवयोनि की प्राप्ति । श्रीकृष्ण का परमधाम सिधारना ।

बारहवाँ स्कन्ध ।

१—कलियुग का प्रभाव । वर्णसङ्करता का वर्णन । मागध-वंशीय भविष्य राजाओं की नामावली । मुक्ति के लिए कृष्णभक्ति का उपदेश ।

२—कलि के दोषों की वृद्धि । कल्कि अवतार की कथा । अधर्मियों का नाश । फिर सत्ययुग का आना ।

३—भूमि-गीता और राज्य के दोषों का वर्णन । पृथ्वी को

अपनी माननेवाले और उसके लिए प्राण देने वाले लोगों के लिए शिक्षा । कलि में हरिभजन की महिमा ।

४—हरिभजन से ही संसार-सागर से पार पाने का वर्णन ।

५—तक्षक के काटने से राजा परीक्षित को जो डर था उसे ब्रह्मज्ञान द्वारा दूर करने की कथा ।

६—राजा परीक्षित की मोक्ष-प्राप्ति । जनमेजय का सर्प-यज्ञ । व्यास की कथा ।

७—अथर्ववेद का विस्तार और पुराणों का विभाग । पुराणों के लक्षण । भागवत के सुनने का माहात्म्य ।

८—मार्कण्डेय की घोर तपस्या । नारायण की स्तुति ।

९—मार्कण्डेय मुनि को प्रलय-समुद्र में माया-शिशु का दर्शन । मुनि का शिशु की देह में चला जाना और बाहर निकलना ।

१०—शिव का आना । मार्कण्डेय-सम्भाषण । मार्कण्डेय के लिए शिव का वरदान । मार्कण्डेय ने मनुष्य-योनि में ही जिस प्रकार अमृत प्राप्त किया उसका वर्णन ।

११—महापुरुष का वर्णन । हर महीने में सूर्य के अलग अलग अवतारों और नामों की पूजा का वर्णन ।

१२—भागवत के पहले स्कन्ध से लेकर अन्त तक की सब कथाओं का अनुक्रम से वर्णन ।

१३—क्रमानुसार पुराणों की श्लोक-संख्या आदि का वर्णन । श्रीमद्भागवत के पुस्तक के दान का फल ।

देवी-भागवत ।

श्रीमद्भागवत की तरह देवी-भागवत में भी बारह ही स्कन्ध हैं। इसकी भी श्लोक-संख्या १८ हज़ार ही है। इसमें कुल ३१७ अध्याय हैं। अब यथाक्रम उनकी कथाओं की सूची इस प्रकार दी जाती है :—

पहला स्कन्ध ।

१, २—शौनक आदि ऋषियों का सूतजी से पुराण-सम्बन्धी प्रश्न। पुराण सुनने की महिमा। भागवत की प्रशंसा। भगवती की प्रशंसा। पुराण का लक्षण। नैमिषारण्य क्षेत्र की प्रशंसा और माहात्म्य।

३, ४—अठारह महापुराणों के नाम और श्लोक-संख्या, उपपुराणों के नाम। युगानुसार व्यासों की उत्पत्ति की कथा। भागवत-माहात्म्य। शुकदेवजी के जन्म की कथा। नारद और व्यास का संवाद। विष्णु की शक्ति का महत्त्व और देवी-महिमा।

५, ६—हयग्रीव अवतार की कथा। सोते हुए विष्णु के पास देवताओं का जाना। एक कीड़े की उत्पत्ति। विष्णु का सिर कटकर कहीं छिप जाना। देवों द्वारा भगवती की स्तुति। आकाशवाणी। विष्णु के सिर कटने का कारण। हयग्रीव दैत्य का सिर काट कर विष्णु के धड़ में जोड़ना।

७, ८—मधु-कैटभ दैत्यों की कथा, उनकी उत्पत्ति। दोनों दैत्यों को ब्रह्मा का दर्शन। युद्ध के लिए ब्रह्मा के पास आना।

ब्रह्मा द्वारा विष्णु की स्तुति । जब विष्णु न जागे तब देवी की प्रार्थना । विष्णु के शरीर से योग-निद्रा का निकल जाना । देवी की महिमा और उसकी प्रधानता का वर्णन ।

९, १०—विष्णु का जागना । विष्णु और मधु-कैटभ का युद्ध । देवी की स्तुति । मधु-कैटभ-वध । शुकदेवजी की उत्पत्ति का प्रश्न । देवी की आराधना के लिए व्यास का वन में जाना । व्यास को घृताची अप्सरा का दर्शन ।

११, १२—बृहस्पति की स्त्री तारा के साथ चन्द्रमा का मेल-मिलाप । चन्द्रमा का अपमान । बृहस्पति का तिरस्कार । चन्द्रमा के द्वारा इन्द्र के दूत का तिरस्कार । इन्द्र का चन्द्र के साथ युद्ध का उद्योग । बुध की उत्पत्ति । सुद्युम्न राजा की कथा । उसका इला नाम स्त्री रूप होना । इला के साथ बुध का मेल । पुरूरवा का जन्म । इलाकृत देवी-स्तुति । सुद्युम्न का मोक्ष ।

१३, १४—पुरूरवा और उर्वशी का नियम । उर्वशी के लेने के लिए गन्धर्वों का आना । उर्वशी का छिप जाना । कुरुक्षेत्र में पुरूरवा को उर्वशी का दर्शन । घृताची अप्सरा का शुकी (तोती) का रूप धारण करना । शुक की उत्पत्ति । शुक देवजी को गृहस्थ धर्म में लगाने के लिए व्यासजी की प्रेरणा । विवाह के लिए शुकदेवजी की नामंजूरी ।

१५, १६—शुकदेव का संसार से विराग । व्यास-शुकदेव-संवाद । शुकदेव का भागवत पढ़ना । बरगद (बड़) के पत्ते पर सोनेवाले भगवान् विष्णु को आधा श्लोक सुनाई देना ।

भगवती का प्रकट होना। उस आधे श्लोक की महिमा। भागवत धर्म का वर्णन। शुकदेव के विराग को देखकर, किसी जीवन्मुक्त जन के पास उपदेश ग्रहण करने जाने के लिए व्यासजी का आदेश। शुकदेवजी का मिथिला-नगरी में राजा जनक के पास जाने का मनोरथ।

१७, १८—शुकदेव का जनकपुरी जाना। जनक के द्वार-पाल से बातचीत। जनक-भवन में जाना। राजा जनक के द्वारा शुक का आदर-सत्कार। शुक के वहाँ जाने का कारण। जनक का उपदेश। परस्पर बातचीत।

१९, २०—शुक का सन्देह दूर होना। शुकदेव का विवाह होना। शुक की तपस्या। भागते हुए शुक के पीछे व्यास का 'पुत्र पुत्र' कहकर भागना। पर्वत और वृक्ष आदि का उत्तर। व्यास और महादेव का समागम। शुक की छाया का दर्शन। पुत्र के शोक में व्यास का अपने जन्मस्थान—द्वीप—में आना। दाशराज का मिलना। शान्तनु की मृत्यु। चित्राङ्गद को राज्यसिंहासन मिलना। चित्राङ्गद और गन्धर्वों का युद्ध। चित्राङ्गद का मारा जाना। विचित्रवीर्य को राजा बनाना। काशिराज की पुत्रियों के स्वयंवर में भीष्मजी का जाना। विचित्रवीर्य की मृत्यु। धृतराष्ट्र, विदुर और पाण्डु की उत्पत्ति की कथा।

दूसरा स्कन्ध।

१, २—सत्यवती की कथा। उपचरि राजा की कथा। मत्स्यगन्धा की उत्पत्ति। पराशर मुनि का आना। कामातुर

मुनि से मत्स्यगन्धा की बातचीत। मत्स्यगन्धा का योजनगन्धा नाम होना। व्यासदेव के जन्म की कथा।

३, ४—महामिष राजा का वृत्तान्त। महामिष और गङ्गा को ब्रह्मा का शाप। आठों वसुदेवों का वसिष्ठ के आश्रम में आना। द्युनामक वसु का वसिष्ठ की गाय चुराना। वसुओं को वसिष्ठ का शाप। गङ्गा के साथ वसुओं का मेल। राजा शन्तनु की उत्पत्ति। गङ्गा के साथ शन्तनु का विवाह। गङ्गा के गर्भ से सात वसुओं की उत्पत्ति। सातों की मृत्यु। आठवें वसु के अवतार, भीष्म की उत्पत्ति। भीष्म को लेकर गङ्गा का कहीं जाकर छिप रहना, शन्तनु को भीष्म का मिलना।

५, ६—शन्तनु को सत्यवती का दर्शन। सत्यवती को प्राप्त करने के लिए उसके पिता धीवर से प्रार्थना। धीवर की प्रतिज्ञा को सुन कर राजा शन्तनु की चिन्ता। शन्तनु और भीष्म का संवाद। भीष्म का धीवर के घर आकर उससे अपने पिता के लिए सत्यवती को माँगना। भीष्म की भीष्म-प्रतिज्ञा। शन्तनु के साथ सत्यवती का विवाह। कर्ण की जन्म-कथा। दुर्वासा का कुन्तिभोज की सभा में आना। कुन्ती को दुर्वासा से मन्त्र-लाभ। कुन्ती के द्वारा सूर्य का बुलाया जाना, कर्ण की उत्पत्ति। कर्ण को गङ्गा में बहादेना। पाण्डु के साथ कुन्ती का विवाह। पाण्डु को मुनि का शाप। युधिष्ठिर आदि पाँचों पाण्डवों की उत्पत्ति। पाण्डु का स्वर्गवास। पाँचों पुत्रों को लेकर कुन्ती का हस्तिनापुर आना।

७, ८—परीक्षित की उत्पत्ति। धृतराष्ट्र की वन-यात्रा।

विदुर की परलोक-यात्रा । धृतराष्ट्र की मृत्यु । यादवों और बलदेव तथा श्रीकृष्ण का वैकुण्ठ-गमन । अर्जुन का द्वारका जाना और मार्ग में चोरों के द्वारा लुटना । परीक्षित को राज्याभिषेक । परीक्षित का शमीक मुनि के गले में मरा हुआ साँप डालना । मुनि का शाप । रुरु-वृत्तान्त ।

९, १०—रुरु का विवाह । साँप के काटने से रुरु की स्त्री की मृत्यु । रुरु की स्त्री का फिर जी जाना । तक्षक से बचने के लिए परीक्षित का उद्योग । तक्षक का परीक्षित को काटना और परीक्षित की मृत्यु ।

११, १२—जनमेजय का राज्यभोग । जनमेजय का विवाह । उत्तङ्क मुनि का हस्तिनापुर में आना । साँपों के नाश के लिए रुरु की प्रतिज्ञा । सर्प-यज्ञ की कथा । आस्तिक द्वारा सर्प-यज्ञ का बन्द कराना । कद्रू और विनता की कथा । कद्रू का साँपों को शाप । गरुड़ का स्वर्ग से अमृत लाना । वासुकि आदि साँपों का ब्रह्मा के पास जाना । आस्तिक की उत्पत्ति की कथा । जनमेजय को भागवत सुनने के लिए व्यासजी का उपदेश ।

तीसरा स्कन्ध ।

१, २—व्यास से जनमेजय का प्रश्न । ब्रह्मा और नारद का संवाद । ब्रह्मा, विष्णु और शिव के साथ देवी की बातचीत ।

३, ४—देवी के दिये हुए विमान में चढ़ कर तीनों देवों का अद्भुत माया का देखना । ब्रह्मा आदि का स्त्री बनना । विष्णु के द्वारा देवी-स्तुति ।

५, ६—शिवकृत देवीस्तुति। ब्रह्मा को महासरस्वती का मिलना। शिव को महाकाली का मिलना।

७, ८—निर्गुण सगुण की कथा।

९, १०—सगुण का लक्षण। व्यास से जनमेजय का प्रश्न। सत्यव्रत ऋषि की कथा। देवदत्त ब्राह्मण का, पुत्र के लिए यज्ञ। पुत्रोत्पत्ति। उतथ्य को वैराग्य और वन-गमन।

११, १२—उतथ्य का सत्यव्रत नाम पड़ना। सत्यव्रत का सरस्वती के बीज 'ऐं' का जपना और महाज्ञान की प्राप्ति। देवी की महिमा। अन्वायज्ञ की विधि। जनमेजय को व्यास का उपदेश।

१३, १४—विष्णु के प्रति देववाणी। ध्रुवसन्धि की कथा। ध्रुवसन्धि की मृत्यु। सुदर्शन को राज्य देने की सलाह। युधाजित और वीरसेन का आना।

१५, १६—युधाजित और वीरसेन का युद्ध। वीरसेन का मारा जाना। सुदर्शन की लीलावती का कहीं चला जाना। सुदर्शन का भरद्वाज-आश्रम में रहना। सुदर्शन के मारने के लिए युधाजित का भरद्वाज के आश्रम पर आना। जयद्रथ का द्रौपदी-हरण।

१७, १८—विश्वामित्र की कथा। युधाजित का घर लौट आना। सुदर्शन को कामबीज की प्राप्ति। काशीराज की कन्या शशिकला का सुदर्शन पर प्रेम। शशिकला का स्वयंवर।

१९, २०—सुदर्शन पर शशिकला का गाढ़ प्रेम। शशिकला के स्वयंवर में सुदर्शन आदि अनेक राजाओं का जाना। शशिकला का स्वयंवर-सभा में जाने से मना करना।

२१,२२—शशिकला की सुदर्शन के ही वरने की इच्छा जान कर युधाजित का तिरस्कार। शशिकला के साथ बातचीत। सुदर्शन का विवाह।

२३,२४—काशी से घर लौटते हुए सुदर्शन से लड़ने के लिए राजाओं का आना। घोर युद्ध। देवी की कृपा से युधाजित की मृत्यु। देवी का काशी में रहना। सुदर्शन का अयोध्या लौट आना।

२५,२६—सुदर्शन का अयोध्या में देवी-मन्दिर बनवाना। नवरात्र-व्रत की विधि। सुशील वैश्य की कथा।

२७,२८—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की उत्पत्ति। राम का वन-गमन। मारीच-वध। रावण का आना और सीता-हरण।

२९,३०—सीता की खोज करना। जटायु से बातचीत। सुग्रीव के साथ रामचन्द्रजी की मित्रता।

३१—राम और लक्ष्मण के साथ नारद की बातचीत। नवरात्र-व्रत का उपदेश। रामचन्द्र का नवरात्र-व्रत करना। रामचन्द्रजी से देवी की बातचीत। रावण का वध।

चौथा स्कन्ध।

१,२—श्रीकृष्ण-अवतार की कथा का प्रश्न। कर्म-फल की प्रधानता।

३,४—वरुण का धेनु-हरण। कश्यप को वरुण का शाप।

५,६—पुत्र के लिए दिति का व्रत। अदिति को दिति का शाप। दिति की सेवा में इन्द्र का आना। इन्द्र द्वारा दिति का

गर्भ-च्छेदन । माया की प्रधानता । नर-नारायण की कथा । दो ऋषियों के घोर तप को देख कर इन्द्र की चिन्ता । तप-खंडन करने के लिए इन्द्र का अप्सराओं को भेजना । नर-नारायण के आश्रम में वसन्त ऋतु का होना । बे-समय वसन्त ऋतु को माया जान कर नारायण की चिन्ता । ऋषियों के सामने अप्सराओं का आना । उर्वशी की उत्पत्ति ।

७,८—सारे ब्रह्माण्ड को अहङ्कार से भरा हुआ बताना । प्रह्लाद को राज्य-लाभ । प्रह्लाद का नैमिषारण्य में आना ।

९,१०—प्रह्लाद को नर-नारायण का दर्शन । प्रह्लाद के साथ नर-नारायण ऋषि का युद्ध । प्रह्लाद के पास विष्णु का आना । प्रह्लाद के साथ विष्णु की बातचीत । प्रह्लाद और इन्द्र का युद्ध ।

११,१२—शुक्राचार्य का पुत्र के लिए यत्न करना । शुक्र की तपस्या । देवों से हराये हुए दैत्यों का शुक्र की माता के पास आना और देवों का शुक्र-माता के साथ युद्ध । शुक्र-माता का वध । भृगु को विष्णु का शाप । शुक्र-माता का जी जाना । इन्द्र का अपनी पुत्री जयन्ती को शुक्र के पास भेजना । शुक्र का जयन्ती के साथ विवाह । बृहस्पति का शुक्र-रूप धारण कर दैत्यों में आ मिलना ।

१३,१४—दैत्यों को ठगना । शुक्राचार्य का बृहस्पति को ही अपना सा रूप बनाये बैठा देखना । दैत्यों की और शुक्र की बातचीत । दैत्यों को शुक्राचार्य का शाप । प्रह्लाद आदि का शुक्राचार्य के पास आना । शुक्राचार्य का फिर दैत्यों में ही मिल जाना ।

१५,१६—देवासुर-संग्राम। देवों की हार । इन्द्र द्वारा देवी-स्तुति। देवी का प्रकट होना । प्रह्लाद द्वारा देवी-स्तुति। दैत्यों का पाताल-गमन। विष्णु के अनेक अवतारों की कथा।

१७,१८—अप्सराओं और विष्णु का संवाद। उर्वशी को साथ लेकर अप्सराओं का स्वर्ग जाना। कृष्णावतार के सम्बन्ध में जनमेजय का प्रश्न। दुःखित पृथ्वी का स्वर्ग में जाना। ब्रह्मा और विष्णु के पास जाना।

१९,२०—देवों द्वारा देवी-स्तुति। देवों से देवी का कथन। देवी-महिमा। वसुदेव और देवकी का विवाह। कंस के लिए देव-वाणी। कंस का देवकी को मारने का उद्योग। वसुदेव के समझाने से कंस के हाथ से देवकी का बचना।

२१,२२—देवकी के पुत्र होना। वसुदेव का कंस को पुत्र देना। कंस के द्वारा वसुदेव के सब पुत्रों का नाश। देवकी के छः पुत्रों का नाश। मरीचि-पुत्रों को देवों का शाप। उनका पृथ्वी पर दैत्य-रूप में जन्म लेना। देवों का पृथ्वी पर अवतार लेना।

२३,२४—देवकी के आठवें गर्भ का होना। देवकी को जेल में रखना। श्रीकृष्ण का जन्म। श्रीकृष्ण को गोकुल में जा बसाना। गोकुल से यशोदा की कन्या का आना। कंस द्वारा कन्या की मृत्यु। कंस के प्रति कन्या की उक्ति। पूतना आदि को गोकुल में भेजना। पूतना-वध। श्रीकृष्ण और बलदेवजी का मथुरा जाना। कंस-वध। श्रीकृष्ण का द्वारिका-गमन। रुक्मिणी-हरण। प्रद्युम्न-हरण।

२५,२६—जनमेजय और व्यास का परस्पर प्रश्नोत्तर-संवाद।

श्रीकृष्ण की शिव-पूजा। श्रीकृष्ण को महादेव का बरदान। श्रीकृष्ण से देवी का कथन।

पाँचवाँ स्कन्ध।

१,२—सब देवों में शिव की अधिक प्रधानता का वर्णन। देवी-माहात्म्य-वर्णन। महिषासुर को वर-लाभ। रम्भ और करम्भ की तपस्या। करम्भ-वध। रम्भासुर-वध। महिषासुर और रक्तबीज की उत्पत्ति।

३,४—महिषासुर का युद्ध के लिए तैयारी करना। देवों की सलाह।

५,६—देव-दैत्यों का युद्ध। विडालाख्य-युद्ध और ताम्रासुर-युद्ध। महिषासुर का युद्ध।

७,८—देव-दैत्यों का घोर युद्ध। महिषासुर का नाना रूप धर कर युद्ध करना। महिषासुर का इन्द्र-पद ले लेना। देवों के द्वारा ब्रह्मा की स्तुति। देवों का ब्रह्मा और शिव के साथ वैकुण्ठ जाना। महिषासुर के मारने की सलाह। सब देवों के तेज से देवी की उत्पत्ति। किस देवता के अंश से किस अङ्ग की उत्पत्ति हुई, इसका वर्णन।

९,१०—देवी का महिषासुर के पास दूत भेजना और महिषासुर का देवी के पास दूत भेजना। देवों को राज्य सौंप कर महिषासुर के पाताल चले जाने के लिए देवी का दूत को उत्तर देना।

११,१२—महिषासुर का मन्त्रियों के साथ सलाह करना।

ताम्रासुर का युद्ध में जाना । ताम्र से देवी की बातचीत। मन्त्रियों के साथ महिषासुर की फिर सलाह ।

१३—१६—बाष्कल और दुर्मुख दैत्यों का युद्ध में जाना। बाष्कल की मृत्यु। दुर्मुख का युद्ध और उसकी मृत्यु। चिक्षुराख्य और ताम्र का युद्ध में जाना। बिडालाख्य का युद्ध और मृत्यु। असिलोमा की मृत्यु। दैत्यों की सेना का रङ्ग-भङ्ग । मनुष्य-रूप धारण करके महिषासुर का युद्ध में जाना। देवी से महिषासुर की बातचीत ।

१७,१८—मन्दोदरी-उपाख्यान। मन्दोदरी का विवाहोद्योग। वीरसेन राजा का मन्दोदरी को देखना। उसके साथ विवाह की इच्छा। मन्दोदरी की बहिन इन्दुमती का स्वयंवर। उसी स्वयंवर में मन्दोदरी का विवाह। महिषासुर और देवी का युद्ध। महिषासुर-वध ।

१६,२०—देवों के द्वारा भगवती की स्तुति । देवों से भगवती का कथन। देवी की लीलाओं का वर्णन। अयोध्या के शत्रुघ्न नामक राजा का महिष-राज्य पर अधिकार ।

२१,२२—शुम्भ-निशुम्भ की कथा । शुम्भ-निशुम्भ का स्वर्ग-विजय। देवों द्वारा भगवती की स्तुति ।

२३,२४—कौशिकी और कालिका की उत्पत्ति । चण्ड और मुण्ड का शुम्भ के पास जाना । अम्बिका और सुग्रीव की बातचीत। शुम्भ-निशुम्भ की सलाह। धूम्रलोचन का युद्ध में जाना ।

२५,२६—धूम्रलोचन-युद्ध। उस का मारा जाना सुन कर

शुम्भ-निशुम्भ की सलाह । चण्ड और मुण्ड का युद्ध में आना । देवी के साथ उनका युद्ध । काली की उत्पत्ति । चण्ड और मुण्ड का वध । देवी का चामुण्डा नाम रक्खा जाना ।

२७, २८—देवी के साथ रक्तबीज का विप्रलाप । शुम्भ की सेना का भारी आयोजन देखकर देव-शक्तियों की उत्पत्ति । देवशक्तियों का युद्ध ।

२९, ३०—रक्तबीज का युद्ध । बहुत से रक्तबीजों की उत्पत्ति । रक्तबीज-वध । युद्ध के लिए निशुम्भ की तैयारी । निशुम्भ और शुम्भ का युद्ध में आना । पहले निशुम्भ के साथ युद्ध । निशुम्भ की मृत्यु ।

३१, ३२—शुम्भ-युद्ध । शुम्भ-वध । देवी का माहात्म्य । सुरथ और समाधि की कथा । सुरथ राजा और समाधि वैश्य का मेल । आपस में बातचीत ।

३३, ३४—महामाया का माहात्म्य-वर्णन । ब्रह्मा और विष्णु का वाग्-युद्ध । शिवलिङ्ग की थाह लेने के लिए ब्रह्मा और विष्णु का उद्योग । विष्णु का पाताल में और ब्रह्मा का आकाश में जाना । केतकी की झूठी गवाही । केतकी को महादेव का शाप । देवी की पूजा-विधि ।

३५—सुरथ और समाधि की देवी-उपासना । देवी का प्रत्यक्ष प्रकट होना । सुरथ और समाधि को वरदान ।

छठा स्कन्ध ।

१, २—वृत्रासुर की कथा का प्रश्न । विश्वरूप की उत्पत्ति

और तपस्या । विश्वरूप का इन्द्र के हाथ से मारा जाना । वृत्रासुर की उत्पत्ति ।

३, ४—इन्द्र के मारने के लिए वृत्रासुर की घोर तपस्या । वृत्रासुर के साथ देवों का युद्ध । देवों की हार । वृत्रासुर का स्वर्ग-राज्य-लाभ । वृत्रासुर के मारने के उद्योग से सब देवों का वैकुण्ठ जाना ।

५, ६—देवों के प्रति विष्णु का देवी-उपासना का उपदेश । देवी-उपासना । प्रसन्न होकर देवी का वरदान । इन्द्र और वृत्र में मेल कराने के लिए ऋषियों का उद्योग । इन्द्र द्वारा वृत्रासुर का वध ।

७, ८—इन्द्र को त्वष्टा का शाप । इन्द्र की निन्दा । इन्द्र का स्वर्ग छोड़ कर मानसरोवर जाना । नहुष को इन्द्र-पदवी-लाभ । इन्द्राणी के लेने की नहुष की इच्छा । नहुष के साथ इन्द्राणी का नियम ।

९, १०—इन्द्र और नहुष का मिलाप । नहुष को अगस्त्य मुनि का शाप । इन्द्र को फिर स्वर्ग-राज्य-लाभ । कर्मों के फलों का वर्णन ।

११, १२—कलियुग-महिमा । तीर्थ-नामावली । हरिश्चन्द्र की कथा । वरुण का हरिश्चन्द्र को शाप ।

१३, १४—शुनःशेप की कथा । वशिष्ठ और विश्वामित्र का आपस में शाप । आठीवक का युद्ध । शाप का नाश । निमि और वशिष्ठ का परस्पर शाप । अगस्त्य और वशिष्ठ की उत्पत्ति ।

१५, १६—जनक की उत्पत्ति । काम और क्रोध आदि

दुर्गुणों का दुर्जयत्व-कथन। हैहय-गण की कथा। लोभ की निन्दा।

१७, १८—और्व ऋषि की उत्पत्ति। लक्ष्मी के प्रति नारायण का शाप। लक्ष्मी को शिव का वरदान। विष्णु का अश्वरूप धारण कर लक्ष्मी के पास जाना। हैहय की उत्पत्ति। उसे छोड़ कर लक्ष्मी का वैकुण्ठ-गमन।

१९, २०—चम्पाख्य विद्याधर की कथा। तुर्वसु को पुत्र-लाभ।

२१, २२—तुर्वसु की वनयात्रा। कालकेतु के द्वारा एकावली का हरण। कालकेतु के साथ हैहय का युद्ध। कालकेतु का वध। एकावली के साथ हैहय का विवाह। व्यास और सत्यवती का संवाद।

२३—२६—काशीराज की पुत्री के पुत्र की उत्पत्ति। मोह का वृत्तान्त। नारद के साथ मदयन्ती का विवाह।

२७, २८—नारद का श्वेतद्वीप में जाना। माया-दर्शन की इच्छा। नारद को स्त्रीरूप की प्राप्ति। तालध्वज राजा का दर्शन।

२९, ३०—स्त्रीरूप नारद का तालध्वज के साथ विवाह। नारद के पुत्र की उत्पत्ति। पुत्र की मृत्यु सुनकर नारद का घोर विलाप। नारद को फिर पुरुष-योनि की प्राप्ति। पत्नी के वियोग में तालध्वज का विलाप। तालध्वज को भगवान् का उपदेश। महामाया की महिमा का वर्णन।

३१—नारद को दुखी देख कर ब्रह्मा का प्रश्न। नारद का निज वृत्तान्त-कथन।

सातवाँ स्कन्ध ।

१, २—इन्द्र और सूर्य्यवंश की कथा। च्यवन ऋषि की कथा ।

३, ४—शर्यांति की कन्या की पति-सेवा । अश्विनीकुमार के साथ बातचीत ।

५, ६—वृद्ध च्यवन को फिर जवानी का मिलना । सुकन्या का च्यवन को लाभ । शर्यांति की कथा ।

७, ८—शर्यांति का यज्ञ । च्यवन के नाश के लिए इन्द्र का वज्र छोड़ना । च्यवन के प्रति इन्द्र की क्षमाप्रार्थना । रेवत राजा की उत्पत्ति । बलदेव के साथ रेवती का विवाह । इक्ष्वाकु राजा के जन्म की कथा । इक्ष्वाकु के पुत्र विकुक्षि को शशाद नाम की प्राप्ति । ककुत्स्थ को राज्य-लाभ । ककुत्स्थ का वंश ।

९, १०—यौवनाश्व के पुत्र मान्धाता की उत्पत्ति। मान्धाता के वंश का वर्णन । सत्यव्रत की उत्पत्ति । विश्वामित्र के पुत्र गालव का वृत्तान्त । सत्यव्रत के द्वारा वशिष्ठ की धेनु-हत्या । वशिष्ठ के शाप से सत्यव्रत का त्रिशङ्कु नाम पड़ना ।

११, १२—सत्यव्रत की पूरी कथा । त्रिशङ्कु को राज्यलाभ । त्रिशङ्कु का राज-पाट छोड़ना । हरिश्चन्द्र को राज्य-प्राप्ति ।

१३, १४—विश्वामित्र और त्रिशङ्कु की कथा । त्रिशङ्कु का स्वर्ग-गमन । त्रिशङ्कु का स्वर्ग से पतन। हरिश्चन्द्र के पुत्र की कथा ।

१५, १६—हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित का नामकरण । वरुण के शाप से हरिश्चन्द्र को जलोदर रोग । रोहित के साथ इन्द्र की बातचीत । अजीगर्त का पुत्र वेचना । शुनःशेप का रोना ।

१७, १८—शुनःशेफ और हरिश्चन्द्र की विस्तारपूर्वक कथा। हरिश्चन्द्र का वन में रोती हुई स्त्री को देखना। विश्वामित्र की घोर तपस्या। विश्वामित्र की चालाकी से हरिश्चन्द्र का राजत्याग।

१९—२७—हरिश्चन्द्र की पूरी कथा और अन्त में रोहित को राज्यलाभ।

२८, २९—शताक्षी देवी का माहात्म्य। सौ वर्ष तक अनावृष्टि। भगवती की पूजा। शाकम्भरी की कथा। भुवनेश्वरी की महिमा।

३०—दक्ष के घर सती की उत्पत्ति और उसकी कथा।

३१, ३२—तारकासुर का वर्णन। हिमालय के घर में देवी का जन्म। देवों के प्रति देवी का कथन।

३३, ३४—देवी की विराट्-मूर्त्ति। ज्ञान की श्रेष्ठता। वेदान्तदर्शन का सार।

३५, ३६—योग का वर्णन। ब्रह्मज्ञान का उपदेश।

३७, ३८—भक्ति और ज्ञान का वर्णन और ज्ञान से मुक्ति का होना। देवी के नामपाठ का माहात्म्य।

३९, ४०—देवी की पूजा और ध्यान। देवीपूजा का विधान।

आठवाँ स्कन्ध।

१, २—स्वायम्भुव मनु की देवी-पूजा। ब्रह्मा की नाक से वराह की उत्पत्ति। हिरण्याक्ष-वध।

३, ४—स्वायम्भुव मनु की कथा। प्रियव्रत के वंश का वर्णन और सातों द्वीपों का विवरण।

५, ६–जम्बूद्वीप और इलावृत वर्ष का वर्णन । नद, नदी और देवी का वर्णन ।

७, ८–सुमेरु पर्वत, ध्रुव नक्षत्र और गङ्गा की धारा का वृत्तान्त । भद्राश्व वर्ष का वर्णन ।

९, १०–हरिवर्ष, केतुमालवर्ष, और रम्यकवर्ष का वृत्तान्त । हिरण्मयवर्ष, उत्तरकुरु और किम्पुरुषवर्ष का वर्णन ।

११, १२–भारतवर्ष का विस्तारपूर्वक वर्णन । भारतवर्ष की प्रधानता । प्लक्षु, शालमलि और कुशद्वीप का वर्णन ।

१३, १४–क्रौञ्च, शाक और पुष्कर-द्वीप का वृत्तान्त। लोकालोक का वर्णन ।

१५, १६–सूर्य की गति का वर्णन । चन्द्रादि ग्रहों की गति का वर्णन ।

१७, १८–ध्रुवचक्र और ज्योतिश्चक्र का वर्णन । राहु की स्थिति और पृथ्वी की नाप ।

१९, २०–पातालों का वर्णन ।

२१, २२–नरकों के नाम । भिन्न भिन्न पापों से भिन्न भिन्न नरकों की प्राप्ति ।

२३, २४–अवीचि नरक का वर्णन । तिथि, वार और नक्षत्र में देवी की विशेष-पूजा की विधि ।

नवाँ स्कन्ध ।

१, २–देवी की अनेक मूर्तियों का वर्णन और पूजा-विधि ।

३,४–विष्णु और महादेव की उत्पत्ति । सरस्वती-कवच और स्तोत्र ।

५, ६–याज्ञवल्क्य का कहा हुआ सरस्वती-स्तोत्र। गङ्गा के शाप से सरस्वती देवी का पृथ्वी पर नदी रूप होकर बहना। सरस्वती-माहात्म्य। विष्णु के सामने देवियों का झगड़ा शान्त होना।

७, ८–भक्तों का लक्षण। कलि का वर्णन। कल्कि अवतार की कथा।

९, १०–परमात्मा से सारे संसार की उत्पत्ति। पृथ्वी की उत्पत्ति। पृथ्वी-पूजा।

११, १२–गङ्गा की उत्पत्ति और पूजा। भगीरथ-कृत गङ्गा-पूजन। गङ्गा का ध्यान, पूजन और स्तोत्र।

१३, १४–गङ्गा के आने की विस्तारपूर्वक कथा। राधा और कृष्ण की कथा।

१५, १६–तुलसी की कथा। वृषध्वज का उपाख्यान। कुशध्वज की स्त्री वेदवती के गर्भ में देवी का आना। वेदवती की तपस्या। वेदवती का रावण को शाप। वेदवती का सीतारूप से जन्म। राम का वनगमन। रावण का सीता-हरण। सीता का द्रौपदी-रूप से जन्म-ग्रहण। द्रौपदी के पाँच पति होने का कारण।

१७, १८–धर्मध्वज की स्त्री माधवी के गर्भ से तुलसी की उत्पत्ति। तुलसी की तपस्या और उसके वृक्ष होने का वर्णन। तुलसी की और विशेष कथा।

१९, २०–शंखचूड़ के साथ तुलसी का विवाह। शंखचूड़ की कथा। तुलसी और शंखचूड़ का परस्पर संवाद।

२१, २२–शंखचूड़ और महादेव का परस्पर उत्तर-प्रत्युत्तर । देवासुर-संग्राम । काली और शंखचूड़ का घोर युद्ध ।

२३, २४—शिव के साथ शंखचूड़ दैत्य की लड़ाई । शंखचूड़-वध । तुलसी के साथ नारायण का सहवास । नारायण को तुलसी का शाप । तुलसी और शालग्राम का माहात्म्य ।

२५, २६—तुलसी की पूजा । गायत्री के जप की विधि और फल ।

२७, २८—यम और सावित्री का संवाद और धर्मसम्बन्धी प्रश्नोत्तर ।

२९, ३०—सती सावित्री और सत्यवान् की अद्भुत कथा । दान-धर्म का फल । किस किस काम से क्या क्या फल मिलता है, इसका वर्णन । जन्माष्टमी और शिवरात्रि-व्रत का विधान ।

३१, ३२—यम का सावित्री-मन्त्रदान । पापियों के कर्म-भोग के लिए नरकों का वर्णन ।

३३, ३४—पापियों की भिन्न भिन्न गति । अनेक नरक-कुण्डों का वर्णन ।

३५, ३६—नरकों के भय दूर करने के लिए यम से सावित्री का प्रश्न । किस उपाय से मनुष्य नरकों के दुःखों से बच सकता है, इसका वर्णन ।

३७, ३८—छियासी कुण्डों का वर्णन । यम का सावित्री को देवी-पूजा का उपदेश देना । देवी-माहात्म्य ।

३९, ४०–महालक्ष्मी की कथा । इन्द्र को दुर्वासा का शाप ।

इन्द्र का स्वर्ग के राज्य से अध:पतन । बृहस्पति के उपदेश से इन्द्र का ब्रह्मा के पास जाना ।

४१, ४२—सब देवों का विष्णु के पास जाना । समुद्र में जन्म लेने के लिए लक्ष्मी को विष्णु की आज्ञा । समुद्र-मथन और उसमें से लक्ष्मी का निकलना । महालक्ष्मी का पूजन, ध्यान और स्तोत्र ।

४३, ४४—स्वाहा की कथा । राधा के डर से श्रीकृष्ण का भाग जाना । दक्षिणा को राधा का शाप । कृष्ण के विरह में राधा का खेद । दक्षिणा की उत्पत्ति और पूजा । नारायण से नारद का षष्ठी, मङ्गलचण्डी और मनसादेवी का वृत्तान्त पूछना ।

४५, ४६—प्रियव्रत के साथ षष्ठी का साक्षात्कार । देवी की कृपा से प्रियव्रत के मरे हुए पुत्र का फिर जी जाना । षष्ठी-पूजा ।

४७, ४८—मङ्गलचण्डी की पूजा और कथा । मनसा-देवी की कथा । मनसा का ध्यान-पूजन । मनसा-माहात्म्य ।

४९, ५०—सुरभि की कथा । सुरभि का पूजन-फल और माहात्म्य । राधा और दुर्गा का माहात्म्य । राधा-स्तोत्र । दुर्गा देवी की महिमा और पूजा ।

दसवाँ स्कन्ध ।

१, २—देवीमाहात्म्य । स्वायम्भुव मनु की उत्पत्ति । स्वायम्भुव मनु के प्रति देवी का वरदान । देवी का विन्ध्याचल में जाना । विन्ध्याचल का वृत्तान्त ।

३, ४—देवों का शिव के पास जाकर विन्ध्याचल का सूर्य-गति के रोकने की कथा पूछना ।

५, ६—विष्णु का देवों को अभयदान । देवों का अगस्त्य मुनि के पास जाना ।

७, ८—विन्ध्याचल की गति की रोक । स्वारोचिष मनु की कथा ।

९, १०—चाक्षुष मनु की कथा । चाक्षुष को राज्य-लाभ । वैवस्वत और सावर्णि मनुओं की कथा । सुरथ का उपाख्यान ।

११, १२—महाकाली-चरित । मधुकैटभ-वध । महिषासुर, शुम्भ और निशुम्भ का वध ।

१३—शेष मनुओं की कथा । भ्रामरी देवी का वृत्तान्त । भ्रामरी की कथा सुनने का फल ।

ग्यारहवाँ स्कन्ध ।

१, २—सदाचार और नित्यक्रिया का वर्णन । शौचविधि ।

३, ४—स्नान-प्रकार । रुद्राक्ष-माहात्म्य और उसके धारण की विधि ।

५, ६—रुद्राक्ष की माला से जप का माहात्म्य । रुद्राक्ष-माहात्म्य ।

७, ८—एक मुँह वाले रुद्राक्ष के धारण करने का माहात्म्य । भूत-शुद्धि ।

९, १०—शिरोव्रत-विधान ।

११, १२—भस्मधारण । भस्मधारण-माहात्म्य ।

१३, १४—भस्म की महिमा । विभूतिधारण-महिमा ।

१५, १६—त्रिपुण्ड्र—(पड़ी हुई तीन रेखाओं वाला तिलक) धारण-माहात्म्य । दुर्वासा के माथे की भस्म के गिरने से नरक-निवासी जीवों के सुख की कथा । सन्ध्या और गायत्री की विधि । सन्ध्या का फल । गायत्री की चौबीस मुद्रा ।

१७, १८—तीन तरह की गायत्री का वर्णन । देवी की पूजा ।

१९, २०—मध्याह्न-काल की सन्ध्या । ब्रह्मयज्ञ और सायङ्काल की सन्ध्या-विधि ।

२१, २२—गायत्री का पुरश्चरण । पाँचों यज्ञों का वर्णन ।

२३, २४—चान्द्रायण आदि व्रतों का विवरण । गायत्री की शान्ति और उसके जप की सिद्धियों का वर्णन । गायत्री-जप के द्वारा महापातक का नाश ।

बारहवाँ स्कन्ध ।

१, २—गायत्री के विषय में नारद का नारायण के प्रति प्रश्न । गायत्री की अद्भुत महिमा का वर्णन । गायत्री के हर एक अक्षर की शक्ति और तत्त्वकथन ।

३, ४—गायत्री-कवच । अथर्ववेद में कहा हुआ गायत्री-हृदय ।

५, ६—गायत्री-स्तोत्र । गायत्री-सहस्रनाम ।

७, ८—दीक्षा-विधि । होम-प्रकार । देवी का यक्षरूप-धारण । यक्ष की कथा ।

९, १०—गायत्री की कृपा से गौतम की सिद्धि की कथा । मणिद्वीप का वृत्तान्त ।

११,१२—पद्मरागादि-प्रकार । चिन्तामणि गृह आदि का वर्णन । देवी का ध्यान ।

१३, १४—देवी के मुख का वर्णन । देवीभागवत के पाठ का फल । व्यास की पूजा ।

६—नारदपुराण ।

पाँच पुराणों का संक्षिप्त वर्णन हो चुका । अब छठे नारद-पुराण का सुनिए । नारदपुराण ही में लिखा है कि इसकी श्लोक-संख्या २५ हज़ार है । पर जो इस समय मिलता है, जिसकी सूची हम यहाँ दे रहे हैं यह, कुल बीस बाइस ही हज़ार श्लोक वाला है । इसके दो भाग हैं । पूर्व और उत्तर । पूर्व में १२५ और उत्तर में ८२ अध्याय हैं । अर्थात् नारद-पुराण में कुल २०७ अध्याय हैं । अध्यायों के अनुसार कथा-सूची इस प्रकार है—

पूर्व-भाग ।

१—१०—नारद और सनत्कुमार का संवाद । गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य । ब्राह्मण को दानपात्र होने का कथन ।

११—२०—देवमन्दिर निर्माण करने का फल-धर्म-शास्त्र । नरकों का वर्णन । भगीरथ के गङ्गा लाने की कथा । विष्णु-व्रत-कथन । वर्णाश्रमाचार-कथन । स्मृतिधर्म-कथन । श्राद्ध-विधि । तिथि आदि का निर्णय । प्रायश्चित्त-निर्णय ।

२१–४०—यमलोक के मार्ग का वृत्तान्त । भवाटवी-निरूपण । ईश्वर-भक्ति का लक्षण । ज्ञान-वर्णन । विष्णु-सेवा का प्रभाव । विष्णु का माहात्म्य ।

४१–५०–युगों के धर्म । सृष्टितत्त्व । जीवात्मा का वर्णन । परलोक की व्याख्या । मोक्ष-धर्म का वर्णन । तीन तापों का वर्णन । योग का वर्णन । परमार्थ-तत्त्व-निरूपण । वेदान्त-शिक्षा का वर्णन ।

५१–६०–कल्प, व्याकरण, निरुक्त, और ज्योतिष और छन्दःशास्त्रों का वर्णन । शुकदेवजी की उत्पत्ति की कथा । ब्राह्मणों के धर्म-कर्मों का वर्णन ।

६१–७०–मोक्षशास्त्र-कथन । भागवत-तत्त्व-निरूपण । दीक्षा-विधि । देव-पूजा । गणेश का मन्त्र । त्रिदेवमूर्त्ति ।

७१–८०–विष्णु का मन्त्र । राममन्त्र-कथन । हनुमान्‌जी का मन्त्र । हनुमान्‌जी को दीपक-विधान । कार्तवीर्य-कवच । हनुमत्कवच । हनुमच्चरित ।

८१—९०—श्रीकृष्णजी का मन्त्र । नारद के पहले जन्म का वृत्तान्त । राधांशावतार । मधु-कैटभ की उत्पत्ति । काली का मन्त्र । सरस्वती का अवतार । शक्तिसहस्रनाम । शक्तिपटल ।

९१—११०—शिवमन्त्र । पुराण-कथा-निरूपण । ब्रह्मपुराण और पद्मपुराण की अनुक्रमणिका । विष्णु, वायु और भागवत पुराण की अनुक्रमणिका । नारद, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ और ब्रह्माण्ड-पुराण की अनुक्रमणिका ।

१११—१२५—प्रतिपद्व्रत-निरूपण । इसी तरह द्वितीया आदि सब तिथियों के व्रतों का वर्णन । पुराण का माहात्म्य ।

उत्तर भाग ।

१—१०—द्वादशी-माहात्म्य । तिथि-विचार । यम-विलाप । लोकों के मोहने के लिए एक मोहनी स्त्री की उत्पत्ति । मोहिनी-चरित । रुक्माङ्गद राजा की कथा ।

११—२०—शिकार खेलते हुए रुक्माङ्गद को वन में मोहिनी का दर्शन । दोनों की आपस में विवाह की प्रतिज्ञा । रुक्माङ्गद के साथ मोहिनी का विवाह । पतिव्रता की कथा । रुक्माङ्गद के पुत्र धर्माङ्गद की कथा । धर्माङ्गद को राजतिलक । दिग्विजय ।

२१—४०—मोहिनी और राजा रुक्माङ्गद के प्रेम की कथा । रुक्माङ्गद को मोहिनी द्वारा अनेक क्लेश देने की कथा । मोहिनी को शाप ।

४१—८२—गङ्गा, गया, काशी, पुरुषोत्तम, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, वदरिकाश्रम, कामोदा, कामाख्यान, प्रभासतीर्थ, पुष्कर, गौतम, त्र्यम्बक, गोकर्ण, लक्ष्मण, सेतु, नर्मदा, अवन्ती, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानों और तीर्थों का माहात्म्य । मोहिनी के तीर्थ-सेवन की कथा ।

७—मार्कण्डेयपुराण ।

पुराणों में मार्कण्डेयपुराण सातवाँ पुराण है । इसमें कुल १३८ अध्याय हैं । इसके श्लोकों की संख्या ६००० कही जाती है ।

कथा ।

१—१३८—इस पुराण में मार्कण्डेय ने पक्षियों पर घटा कर सब धर्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । पक्षियों की धर्मसंज्ञा । पूर्वजन्म की कथा । बलदेवजी की तीर्थ-यात्रा, द्रौपदेय-कथा, हरिश्चन्द्र-चरित, दत्तात्रेय-कथा, हैहय-कथा, मदालसा रानी की कथा । अलर्क-चरित । नौ तरह की सृष्टि-रचना । कल्प-कल्पान्तरों की कथा । द्वीप-द्वीपान्तरों की कथा । मनुओं का चरित । दुर्गा की कथा । वत्सप्रीति-चरित । खनित्र-कथा । नरिष्यन्त-चरित । इक्ष्वाकु, तुलसी, रामचन्द्र, कुरुवंश, सोमवंश, पुरूरवा, नहुष, ययाति, यदुवंश, श्रीकृष्ण, आदि की अनेक कथाओं का उल्लेख है । संसार की असारता का वर्णन करके अन्त में मार्कण्डेय भगवान् का चरित वर्णन किया है । बस, मार्कण्डेयपुराण में यही सब कथायें हैं ।

८—वह्नि-पुराण ।

वह्निपुराण वा अग्निपुराण दो प्रकार का प्रचलित है । वह्निपुराण में कुल १८१ अध्याय हैं और अग्निपुराण में ३८३ । इस पुराण में १५,००० श्लोक माने गये हैं ।

कथा-सूची ।

(क) वह्निपुराण ।

९१—१००—सीता-हरण जटायु-मरण । कबन्ध-वध । सुग्रीव से मित्रता।

१०१—११०—राम और हनुमान की बातचीत । बालि-वध । बन्दरों का सीता की खोज में जाना ।

१११—१२०—हनुमान का लङ्का में जाना ।

१२१—१३०—सीता-विलाप । सीता से बातचीत । वन-भङ्ग ।

१३१—१४०—हनुमान् का राक्षसों को मारना । लङ्का-दाह ।

१४१—१५०—सीता की ख़बर पाकर रामचन्द्रजी का सेना समेत लङ्का पर चढ़ाई करने के लिए तैयारी करना । विभीषण से मेल । समुद्र पर पुल बाँधना ।

१५१—१६०—कुम्भकर्ण आदि राक्षसों का वध ।

१६१—१७०—इन्द्रजीत तथा और कितने ही राक्षसों का वध ।

१७१-१८१—रावण और रामचन्द्रजी का घोर युद्ध । रावण-वध । विभीषण को लङ्का का राजतिलक । विमान पर चढ़ कर राम का अयोध्या को लौटना ।

(ख) अग्निपुराण

समस्त अवतारों की कथा । देवालय-विधि । शालग्राम आदि की पूजा । सर्वदेव-प्रतिष्ठा । गङ्गा आदि तीर्थ-माहात्म्य । द्वीपों का वर्णन । ऊपर और नीचे के लोकों की कथा । आश्रमों के

धर्म । प्रायश्चित्तों की व्यवस्था । व्रत आदि का विधान । नरकों का वर्णन । सन्ध्या की विधि । गायत्री का अर्थ-वर्णन । लिङ्ग-स्तोत्र । राजाओं के अभिषेक का मन्त्र । राजधर्म-वर्णन । स्वप्न और शकुनों का फल । रण-दीक्षा । रामोक्त नीति-कथा । रत्नों के लक्षण । धनुर्विद्या और व्यवहार-ज्ञान । देवासुर-सङ्ग्राम की कथा । आयुर्वेद का वर्णन । पशु-चिकित्सा । छन्दःशास्त्र, साहित्य आदि का वर्णन । नरक वर्णन । योगशास्त्र और ब्रह्मज्ञान का निरूपण । पुराण के सुनने का फल इत्यादि अनेक विषयों का वर्णन अग्निपुराण में किया गया है ।

९—भविष्य-पुराण

इस पुराण में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति आदि विषयों का वर्णन वैसा ही है जैसा कि अन्य पुराणों में है । इसके 'प्रतिसर्ग' नामक पर्व में भविष्यकाल की कथायें हैं, जिनमें धर्मराज के राज्यकाल से लेकर आगे होनेवाले नाना देशों और नाना वंशों में उत्पन्न आर्य्य, म्लेच्छ, यूरोपियन, रूसी, चीनी और सिंहली आदि राजाओं के चरित्र तथा बादशाहियों का वर्णन है । इसमें ४ पर्व और ५८५ अध्याय हैं । इतने बड़े पुराण के प्रत्येक अध्याय की संक्षिप्त कथा लिखी जाय तो पुस्तक बहुत बढ़ जाय । अतएव प्रत्येक पर्व का ही संक्षिप्त वर्णन किया जाता है ।

ब्राह्म-पर्व ।

राजा शतानीक ने धर्मशास्त्र सुनना चाहा तब व्यासजी की

आज्ञा से 'सुमन्तु' ने सुनाया । इसमें ब्रह्माण्ड का सृष्टि-वर्णन, चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था, संस्कार और गृहस्थ-धर्मादि का वर्णन है। फिर व्रतों के माहात्म्य का वर्णन, सामुद्रिक शुभाशुभ लक्षण, नक्षत्र पूजा-विधि, साम्बोपाख्यान, और भोजक जाति वर्णन, आदि हैं । तदनन्तर आचार-प्रशंसा, व्यास-भीष्म-संवाद, ब्रह्मदेव-विष्णु-संवाद और व्योम-पूजा का विधान है ।

मध्यम-पर्व

पहला भाग ।

इसमें लोक-वर्णन, ब्राह्मण-माहात्म्य, बाग़ लगाने की विधि, और होम-निर्णय आदि हैं ।

दूसरा भाग ।

इसमें भी यज्ञ की विधियों का सूक्ष्म वर्णन है । प्रतिष्ठा के योग्य समय का निर्णय और गृहवास्तु की विधि वर्णित है ।

तीसरा भाग ।

इसमें पीपल का पेड़ रोपने और जलाशय की प्रतिष्ठा करने का वर्णन भली भाँति किया गया है और यह भी दिखाया गया है कि वृक्षों की उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणियाँ कौन कौनसी हैं ।

प्रतिसर्ग-पर्व

पहला खण्ड ।

कृतयुग के राजाओं के वर्णन में वैवस्वत मनु से लेकर

सुदर्शन नरपति के राज्यकाल तक का हाल है, फिर द्वापरयुग के नरपतियों का विवरण है। इसमें म्लेच्छ-यज्ञ का भी वृत्तान्त है। और आदम, श्वेत, न्यूह, केकाऊस, महल्लल, विरद, हनूक, मताधिल, होमक, शाम आदि का वृत्तान्त वर्णित है। म्लेच्छ-भाषा और उनके देशों का भी हाल प्रदर्शित किया गया है। फिर आर्य्यावर्त में म्लेच्छागमन का कारण, मागध-राज-वर्णन, गौतम बुद्ध की उत्पत्ति, पटने में बौद्ध धर्म का संस्कार और चार प्रकार के क्षत्रियों की उत्पत्ति का विवरण दिया गया है।

दूसरा खण्ड।

इसमें मधुमती के वर के निर्णय की कथा, कामाङ्गी कन्या की कथा, गुणशेखर-राजपत्नी की कथा, विक्रम का यज्ञ और चन्द्र-लोक-गमन, भर्तृहरि का वृत्तान्त, सत्यनारायण की पूरी कथा, पाणिनि का वृत्तान्त, तोतादरी के वोपदेव का हाल, महा-नन्दि नृप की कथा और व्याकरण-महाभाष्यकार पतञ्जलि का वृत्तान्त है।

तीसरा खण्ड।

इसमें, भारती-युद्ध में मारे गये कौरवों, यादवों और पाण्डवों के पुनर्जन्म की कथा का हाल दिया हुआ है। फिर शालिवाहन के द्वारा शकों के पराजय होने तथा शालिवाहन-वंशियों का राज्य वर्णित है। तदनन्तर राजा भोज की दिग्विजय-यात्रा है जिसमें मसीही और मुहम्मदी धर्म के स्थलों की स्थिति का वर्णन है। जयचन्द्र और पृथ्वीराज की कथा, संयोगिनी

का स्वयंवर, पृथ्वीराज का चत्रियों से घोर युद्ध, कृष्णांश-चरित्र-वर्णन, ईंदल-पद्मिनी का विवाह, कुतुबमीनार का हाल है।

चौथा खण्ड।

इसमें बुन्देलखण्ड का वृत्तान्त और कल्पसिंह पर्य्यन्त समरवंश की समाप्ति, जाटों का हाल, कच्छ, भुज्ज, उदयपुर और कन्नौज का वृत्तान्त, दिल्ली के मुसलमान राजाओं का हाल, मध्वाचार्य की उत्पत्ति, विष्णुस्वामी, भट्टोजी दीचित और वराहमिहिर, जयदेव, कृष्ण-चैतन्य, शङ्कराचार्य तथा गोरखनाथ आदि की उत्पत्ति का हाल दिया हुआ है। कबीर, नरसी, पीपा और नानक आदि का साधु-चरित्र, दिल्ली में तिमिरलिङ्ग के बेटे का वर्णन, अकबर और औरंगज़ेब आदि मुग़लों, दक्षिण के शिवाजी, नादिर और रामचन्द्र के वरदान से वानर-वंश में उत्पन्न गुरुंडवंशियों का वाणिज्य के लिए आर्यदेश में आगमन, कलकत्ता और अष्ट-कौशल (पार्लमेंट) आदि का उल्लेख है।

उत्तर-पर्व।

इसमें राज्याभिषिक्त युधिष्ठिर का व्यासजी से स्वज्ञाति-वध के पाप से बचने के लिए प्रायश्चित्त पूछना, श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद, अनेक व्रतों का माहात्म्य, दशावतार-चरित्र, दान और पूजा-माहात्म्य, कृष्ण-युधिष्ठिर संवाद की समाप्ति और कृष्ण के द्वारकापुरी में जाने का वर्णन है।

१०—ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण

ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण में चार खण्ड हैं। उन चारों खण्डों के नाम क्रमशः ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड और श्रीकृष्णजन्म-खण्ड हैं। पहले में ३०, दूसरे में ६७, तीसरे में ४६ और चौथे में १३३ अध्याय हैं। अब यथाक्रम अध्यायानुसार कथा-सूची लिखते हैं।

ब्रह्म-खण्ड।

१, १०—सृष्टिरचना। रासमण्डल में राधा की उत्पत्ति। श्रीकृष्ण का शिव को वरदान। वेदादिशास्त्रों की उत्पत्ति। कश्यप आदि की उत्पत्ति और पृथ्वीगर्भ से मङ्गल की उत्पत्ति। कश्यप-वंश-वर्णन और चन्द्रमा को दक्ष का शाप।

११—२०—विष्णु, विष्णुभक्त और ब्राह्मण की प्रशंसा। नारद का गन्धर्व रूप में जन्म। ब्राह्मण के शाप से गन्धर्व की मृत्यु। मालावती का विलाप। ब्राह्मण-बालक के रूप में विष्णु का मालावती के पास आना। मालावती को कर्मफल का उपदेश। चिकित्साशास्त्र का निर्माण। विष्णु की प्रशंसा। मरे हुए नारद का पुनर्जीवन-लाभ। बाणासुर-कृत शिवस्तोत्र। उपबर्हण गन्धर्व का शूद्रायोनि में जन्म धारण करना।

२१—३०—नारद आदि की उत्पत्ति-कथा। नारद का शाप दूर होना। ब्रह्मा और नारद का संवाद। मन्त्रोपदेश लेने के लिए नारद का शिव के समीप जाना। नारद को ब्रह्मा का उपदेश। शिव का नारद को कृष्णमन्त्रदान। नित्यकर्म-वर्णन।

खाने न खाने की वस्तुओं का वर्णन। ब्रह्म-निरूपण। नारायण और ऋषियों के प्रति नारद का प्रश्न। ईश्वर के स्वरूप का वर्णन।

प्रकृतिखण्ड।

१—१०—प्रकृति-वर्णन। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति। देव और देवी-गणों की उत्पत्ति। सरस्वती-पूजा-विधान। सरस्वती, लक्ष्मी और गङ्गा का आपस में शाप-प्रतिशाप। तीनों का नदी रूप होकर बहना। पृथ्वी की उत्पत्ति, पूजा और स्तोत्र। भगीरथ का गङ्गा को लाना। श्रीकृष्ण को राधा की डाँट। राधा का क्रोध।

११—२०—भगवान् के चरण से गङ्गा के निकलने की कथा। गङ्गा और नारायण का विवाह। वेदवती की कथा। तुलसी का जन्म। तुलसी पर मोहित होकर शंखचूड़ का उसके पास आना। देव-दैत्यों का घोर युद्ध। शिव-शंखचूड़-संवाद। महादेव के द्वारा शंखचूड़-वध। शंखचूड़ की हड्डी से शंख की उत्पत्ति।

२१—३०—तुलसीपत्र का माहात्म्य और उसके गुण। तुलसी के आठ नाम और उसकी पूजा। सावित्री और सत्यवान् की कथा। सत्यवान् की मृत्यु और यम के साथ सावित्री की बातचीत। यम का सावित्री के प्रति वर-दान। नरककुण्डों का वर्णन।

३१—४०—पापानुसार नरकों में पड़ने की कथा। सत्यवान् का जीवित होना। इन्द्र के प्रति दुर्वासा का शाप। देवों

को साथ लेकर इन्द्र का विष्णु के समीप वैकुण्ठ में जाना। इन्द्र को विष्णु का समझाना। समुद्र-मन्थन और लक्ष्मी-प्राप्ति। लक्ष्मी-पूजा-विधि। स्वाहा की कथा।

४१—५०—स्वधा की कथा। दक्षिणा, यज्ञ-दक्षिणा की कथा। षष्ठी देवी की पूजा। मङ्गलचण्डी का ध्यान। जरत्कारु का मनसा देवी के साथ विवाह। आस्तिक का जन्म। परीक्षित के मर जाने बाद जनमेजय का सर्पयज्ञ। सुरभि की कथा। राधा शब्द की निरुक्ति। विरजा के साथ श्रीकृष्ण का विहार। विरजा का नदी हो जाना। राधा और सुदामा का विवाद। आपस में शाप-प्रतिशाप।

५१—६०—सुयज्ञ राजा के लिए ऋषियों का उपदेश। ब्राह्मण-चरणोदक की महिमा। राजा की पूजा-विधि। राधिका-कवच। दुर्गा के सोलह नामों की व्याख्या।

६१—६७—बुध के जन्म और बृहस्पति को तारा-प्राप्ति की कथा। सुरथ और वैश्य-वंश का परिचय। सुरथकृत प्रकृति-पूजा। प्रकृति-पूजा का फल-निरूपण। दुर्गा-स्तुति और कवच।

गणेश-खण्ड।

१—१०—पार्वती-महादेव का विहार-भङ्ग। पार्वती के प्रति शङ्कर का उपदेश। पुण्यक व्रत की कथा। पति-प्राप्ति के लिए पार्वती का फिर श्रीकृष्ण की आराधना करना। वर-प्राप्ति। गणेश-जन्म की कथा। गणेश का मङ्गलाचार।

११—२०—पार्वती और शनि का संवाद। गणेश का

नामकरण । गणेश की पूजा, स्तोत्र और कवच आदि का वर्णन । कार्त्तिकेय और नन्दिकेश्वर की बातचीत । कार्त्तिकेय का कैलास में जाना । कार्त्तिकेय का अभिषेक । सूर्य-स्तुति और कवच । गणेश के हाथी का मुँह होने की कथा ।

२१—३०—इन्द्र को लक्ष्मी-प्राप्ति । लक्ष्मी-चरित । गणेश के एक दाँत होने का कारण । जमदग्नि और कार्त्तवीर्य की कथा । कार्त्तवीर्य और जमदग्नि का युद्ध । कार्त्तवीर्य की हार । जमदग्नि की मृत्यु और उनके पुत्र परशुराम की घोर प्रतिज्ञा । भृगु और वेणु का संवाद । ब्रह्मा और परशुराम का संवाद । शङ्कर और परशुराम का संवाद ।

३१—४०—शङ्कर का प्रसन्न होकर परशुराम को कवच-दान । परशुराम की युद्ध-यात्रा । स्वप्न-दर्शन । कार्त्तवीर्य की स्त्री मनोरमा का परलोक-गमन । मत्स्यराज और परशुराम का घोर युद्ध । राजा सुचन्द्र के साथ परशुराम का युद्ध । पुष्कराक्ष के साथ युद्ध । महालक्ष्मी और दुर्गा के कवच । कार्त्तवीर्य और परशुराम का युद्ध । कार्त्तवीर्य का परलोकवास ।

४१—४६—परशुराम का कैलास में जाना । गणेश और परशुराम का संवाद । युद्ध में गणेश का दाँत टूटना । तुलसी और गणेश का परस्पर शाप-प्रदान ।

श्रीकृष्ण-जन्मखण्ड ।

१—१०—नारद और नारायण का संवाद । विष्णु-सम्बन्धी प्रश्न । विष्णु और वैष्णव-गुणकथन । श्रीकृष्ण का

विरजा के साथ विहार। राधिका के डर से श्रीकृष्ण का छिप जाना और विरजा का नदी रूप होकर बह निकलना। श्रीकृष्ण को राधा का शाप। राधा और श्रीसुदामा का परस्पर शाप। पापियों के भार से दुःखी होकर पृथ्वी का ब्रह्मलोक जाना। देवों का हरि के समीप जाना। गोलोक का वर्णन। श्रीकृष्ण का जन्म। कंस के द्वारा देवकी के छः पुत्रों की मृत्यु। जन्माष्टमी व्रत का वर्णन। पूतना-मोक्ष।

११—२०—तृणावर्त दैत्य का वध। शकट-भञ्जन। गर्ग मुनि और नन्द की बातचीत। श्रीकृष्ण का नामकरण। यमलार्जुन-भञ्जन। राधाकृष्ण का संवाद और विवाह। वक, केशी और प्रलम्बासुर का वध। वृन्दावन-यात्रा। कलावती के साथ वृषभानु की प्रीति। राधा के सोलह नाम। कालियदमन। वन की अग्नि से गोपों की रक्षा। ब्रह्मा द्वारा गाय-बछड़ों का हर लेजाना। ब्रह्मा-कृत श्रीकृष्ण-स्तुति।

२१—३०—इन्द्र-यज्ञ का रोकना। श्रीकृष्ण का गोवर्धन-धारण। धेनुक दैत्य का वध। तिलोत्तमा अप्सरा और बलिपुत्र का शाप-कथन। दुर्वासा का विवाह और पत्नी-वियोग। उर्वशी के शाप से दुर्वासा का तिरस्कार। एकादशी-व्रत-निरूपण। गौरी-व्रत-विधान। रासलीला की कथा। अष्टावक्र की कथा। रम्भा के शाप से देवल का आठ जगह से टेढ़ा होना।

३१—४०—गङ्गा के जन्म की कथा। रति और काम की उत्पत्ति। पार्वती का जन्म-वर्णन। मदन-भस्म-वर्णन।

४१—५०—पार्वती की घोर तपस्या। महादेव की विवाह-

यात्रा । शिव-विवाह का वर्णन । इन्द्र, सूर्य, अग्नि, दुर्वासा और धन्वन्तरि का दर्प-खण्डन । राधा-कृष्ण का विहार ।

५१—६०—श्रीकृष्ण का संक्षिप्त चरित । राधा-विरह-कथा । इन्द्राणी और नहुष का संवाद । नहुष का शाप के कारण सर्प बनना ।

६१—७०—इन्द्र और अहल्या की पाप-कथा । इन्द्र को गौतम का शाप । संक्षेप से रामायण की कथा । कंस-यज्ञ-वर्णन ।

७१—८०—श्रीकृष्ण की मथुरा-यात्रा । धोबी को दण्ड देना । कुब्जा का प्रसाद । कंस की मृत्यु । देवकी-वसुदेव का छुटाना । दान-फल । सुस्वप्न-फल-कथन । सूर्यग्रहण का कारण-वर्णन । चन्द्रग्रहण में कारण ।

८१—९०—दुःस्वप्नों का वर्णन । चारों वर्णों का धर्म-वर्णन । गृहस्थ धर्मों का वर्णन । स्त्री-चरित्रकीर्तन । भक्तों के लक्षण । ब्रह्माण्ड का वर्णन । भक्ष्याभक्ष्य-निरूपण । कर्मों के फलों का वर्णन । उद्धव का वृन्दावन-गमन ।

९१—१००—भगवान् के साथ देवकी और वसुदेव का संवाद । उद्धव का वृन्दावन-गमन । राधा और उद्धव की बातचीत । राधा का खेद । उद्धव के प्रति राधा का खेद । मथुरा में उद्धव का लौटकर जाना और वहाँ का सब हाल श्रीकृष्ण से कहना ।

१०१—११०—कृष्ण-बलदेव का यज्ञोपवीत-संस्कार । सान्दीपनि मुनि के पास विद्या पढ़ने जाना । द्वारका-गमन ।

रुक्मिणी-हरण। बलदेव-द्वारा रुक्मी का पराजय । राधा और यशोदा का संवाद ।

१११—१२०—यशोदा के प्रति राधिका का उपदेश। सोलह हज़ार रानियों के साथ श्रीकृष्ण का विवाह । उनकी सन्तानों का वर्णन । दुर्वासा का द्वारिका में जाना। जरासन्ध-वध । शाल्व-वध । शिशुपाल और दन्तवक्त्र वध । कौरव-पाण्डवों का युद्ध । ऊषा और अनिरुद्ध का स्वप्न-समागम। ऊषा के साथ अनिरुद्ध का गान्धर्व-विवाह। बाणासुर का युद्ध। अनिरुद्ध के हाथ से बाण का पराजय। यादवों और असुरों का युद्ध ।

१२१—१३३—शृगालराज-मोक्षण। स्यमन्तक की कथा। राधा की गणेश-पूजा। राधा-कृष्ण का दूसरी बार मिलना। राधा-कृष्ण का विहार और यशोदा का आनन्द। नन्द के प्रति श्रीकृष्ण का कलि-धर्म-कथन । यदुकुल-विध्वंस। पाण्डवों का स्वर्गारोहण। नारद का सञ्जय की कन्या के साथ विहार। सनत्कुमार के उपदेश से तपस्या में लगना। नारद की मुक्ति। अग्नि और सोने की उत्पत्ति । महापुराण और उपपुराण का लक्षण। महापुराणों के श्लोकों की संख्या। उपपुराणों के नाम। ब्रह्मवैवर्त पुराण की नाम-निरुक्ति। उसका माहात्म्य और सुनने का फल।

११—लिङ्गपुराण ।

लिङ्गपुराण ग्यारहवाँ पुराण है । इसमें दो भाग हैं—पूर्व और उत्तर । दोनों में सब मिला कर १६३ अध्याय हैं । पूर्व भाग में १०८ और उत्तर में ५५ । इस की कथाओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है:—

पूर्व-भाग ।

१—१०—संसार की रचना का वर्णन । ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति । चारों युगों का परिमाण । योगमार्ग से शिवपूजा । योगियों के लिए विघ्न । लिङ्गपूजा-विधि ।

११—२०—श्वेत, लोहित आदि कल्पों की कथा । ब्रह्मा और विष्णु के झगड़े मिटाने के लिए लिङ्ग की उत्पत्ति । विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति ।

२१—३०—ब्रह्मा और विष्णु की शिवस्तुति । दोनों को वर-लाभ । गायत्री-महिमा । भिन्न भिन्न द्वापर में भिन्न भिन्न व्यासों की उत्पत्ति का वर्णन । भविष्य व्यास का कथन । स्नान-विधि । सन्ध्या और पञ्चयज्ञ-विधि । मानस-शिव-पूजा । सुदर्शन की कथा । शिव-पूजा के प्रताप से श्वेत की मृत्यु से रक्षा ।

३१—४०—शिव द्वारा शैव-महिमा-वर्णन । देवों के साथ विष्णु का दधीचि-पराभव । युगधर्म । कलि-धर्म ।

४१—५०—ब्रह्मा को देवीपुत्र-कथन । पृथिवी, द्वीप-

सागर आदि का वर्णन । जम्बू द्वीप के नव वर्षों का वर्णन । सुमेरु का परिमाण । जम्बूद्वीप का मान ।

५१—६०—शिव के मुख्य चार स्थानों का वर्णन । गङ्गा की उत्पत्ति । ऊपर के लोकों और नरकों का वर्णन । सूर्य की गति और ध्रुव का वर्णन । ग्रहों का वर्णन ।

६१—७०—ध्रुव-चरित । वसिष्ठ का पुत्र-शोक । पराशर की उत्पत्ति । शिवसहस्रनाम । ययाति का चरित । यदुवंश का वर्णन । कृष्णावतार-कथा ।

७१—८०—त्रिपुर की कथा । शिवालय बनवाने का फल । वस्त्र से छने हुए जल के वर्तने का उपदेश । अहिंसा-भक्ति का फल ।

८१—९०—अनेक शिवव्रत-कथन । पञ्चाक्षर मन्त्र । योगि-सदाचार । स्त्री-धर्मों का वर्णन ।

९१—१००—मृत्यु-चिह्न । प्रणव की महिमा । काशी-माहात्म्य । वराह-द्वारा हिरण्याक्ष का वध । नृसिंह-द्वारा हिरण्यकशिपु का वध । वीरभद्र के द्वारा नृसिंह-पराजय । शिवसहस्रनाम के प्रताप से विष्णु को सुदर्शन-चक्र का लाभ । दक्ष-यज्ञ का विध्वंस ।

१०१—१०८—पार्वती की तपस्या । मदन-भस्म करना । शिवविवाह । पुत्र-उत्पादन । गणेश की उत्पत्ति । काली की उत्पत्ति । उपमन्यु को शिव का प्रसाद ।

उत्तर-भाग ।

१—१०—कौशिक-कथा । विष्णु-माहात्म्य । विष्णु-भक्त का

लक्षण । अम्बरीष-चरित । लक्ष्मी-प्राप्ति के उपाय । धौन्धुमूक-चरित । शिव के पशुपति नाम का अर्थ ।

११–२०—शिवविभूति-वर्णन । शिव को ब्रह्म-कथन । शिव के अनेक प्रकार के नाम । शिव-पूजा । शिव-स्तुति ।

२१—३०—शिव-पूजा-नियम । मानस-शिव-पूजा । अघोर-पूजा । तुलादान का वर्णन । तिल-पर्वत-दान का वर्णन ।

३१–४०—सुवर्ण-पृथ्वी-दान-विधि । गणेश-दान-विधि । सुवर्ण-धेनु, लक्ष्मी, तिल-धेनु, गो-सहस्र, सुवर्णाश्व, कन्या आदि दानों की विधि ।

४१–५०—अनेक प्रकार के दानों की विधि । अघोरेश की प्रतिष्ठा-कथन । शत्रुओं के निग्रह करने का उपाय ।

५१–५५—वज्रवाहनिका विद्या का वर्णन । उसका विनियोग । मृत्युञ्जय-विधि । शिव-पूजा । योग-कथन । लिङ्गपुराण के पढ़ने, सुनने और सुनाने का फल ।

१२—वाराहपुराण ।

वाराहपुराण में कुल २१८ अध्याय हैं । इसमें मुख्यता से वराह भगवान् की महिमा है । संक्षिप्त कथा की सूची इस प्रकार है;—

कथा-सूची ।

१–१०—पृथ्वी-कृत ईश्वर-स्तुति । सृष्टि-कथा । वराह-कृत सृष्टि-वर्णन । वराह ही के द्वारा रुद्र, सनत्कुमार और मरीचि

आदि की उत्पत्ति। प्रियव्रत की कथा। अश्वशिरा की कथा। रैभ्य का उपाख्यान। धर्मव्याध की कथा। सुप्रतीक की कथा।

११–२०—गौरमुख-उपाख्यान। दुर्जयकृत नारायण-स्तोत्र। श्राद्धकाल और पितृ-गीता का वर्णन। श्राद्ध में भोजन के योग्यों की पहचान। प्रजागण का चरित्र। अग्नि की उत्पत्ति। तिथि-महिमा। अश्विनीकुमार के जन्म की कथा।

२१–३०—गौरी की उत्पत्ति। दक्ष-यज्ञ-विध्वंस। पार्वती के साथ महादेव का विवाह। गणेश-जन्म-कथा। गणेश के प्रति महादेव का शाप। नागोत्पत्ति की कथा। कात्यायनी देवी की उत्पत्ति। वृत्रासुर-वृत्तान्त। कुवेर की उत्पत्ति।

३१–४०—रुद्र की उत्पत्ति। अमावस्या के दिन करने योग्य काम। आरुणिक की कथा। पूस सुदी दशमी के व्रत की कथा।

४१–५०—अनेक एकादशियों के व्रत की कथा।

५१–६०—शुभव्रत, धन्यव्रत, कान्तिव्रत आदि अनेक व्रतों की कथा।

६१–७०—व्रतों की कथा। युग में धर्मभेदों का वर्णन। ग्रहण-योग्य और त्याग-योग्य स्त्री का वर्णन। अगस्त्य के शरीर की कथा।

७१–८०—भूमि और द्वीपों का वर्णन। ब्रह्मा, विष्णु और शिव की अभिन्नता। अमरावती-वर्णन।

८१–९०—भारतवर्ष, शाकद्वीप आदि का वर्णन। अन्धकासुर-वध-कथा।

९१–१००—वैष्णवी-चरित। महिषासुर की कथा। रौद्री-चरित। रुद्र-दैत्य का वध।

१०१–११०—रसधेनु, गुरुधेनु आदि अनेक धेनुओं के दान का फल।

१११–१२०—पृथ्वी और सनत्कुमार का संवाद। नारायण और पृथ्वी का संवाद। अपराध-भञ्जन-प्रायश्चित्त।

१२१–१३०—सनातन-धर्मस्वरूप-कथन। माया का रूप। संसार से छूटने के कर्मों का वर्णन। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की दीक्षा-विधि।

१३१–१४०—अनेक प्रकार के प्रायश्चित्तों का वर्णन। चाण्डाल और ब्रह्मराक्षस का संवाद।

१४१–१५०—बदरिकाश्रम-माहात्म्य। रजस्वला-धर्म। मथुरा-माहात्म्य। द्वारावती आदि का माहात्म्य-वर्णन।

१५१–१६०—मथुरा आदि का माहात्म्य। देववन का प्रभाव।

१६१–१७०—चक्रतीर्थ आदि तीर्थों के माहात्म्य। कपिल-चरित। गोकर्ण-माहात्म्य।

१७१–१८०—सरस्वती और यमुना के सङ्गम पर विष्णु की पूजा का फल। कृष्ण-गङ्गा का माहात्म्य। पाञ्चाल ब्राह्मणों का इतिहास। प्रायश्चित्त-निरूपण-विधि। ध्रुव-तीर्थ की महिमा।

१८०–१९१—लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की बनी प्रतिमाओं के स्थापन की विधि। श्राद्ध की उत्पत्ति।

१९१–२००—यमालय आदि का वर्णन। यम की सभा और पापियों का वर्णन। नरकों का वर्णन।

२०१–२१०–यमदूतों का स्वरूप । चित्रगुप्त का प्रभाव । यम और चित्रगुप्त का संवाद । पतिव्रता की कथा । धर्मोपदेश ।

२११–२१८–प्रबोधिनी-माहात्म्य । गोकर्णेश्वर-माहात्म्य । जलेश्वर का माहात्म्य । शृङ्गेश्वर का माहात्म्य । पुराण-पाठ और सुनने का फल । विषयानुक्रमणिका ।

१३—स्कन्दपुराण ।

स्कन्दपुराण सब से बड़ा है । इसमें ८० हज़ार से भी ज्यादा श्लोक हैं । यह कई खण्डों में बँटा हुआ है । इसमें बड़ी गड़-बड़ी है । किसी पुराण के मत से कितने खण्ड हैं और किसी के मत से कितने । समझ में नहीं आता कि ठीक ठीक कितना स्कन्दपुराण है । नारदपुराण के मत से इसमें ७ खण्ड पाये जाते हैं । १–माहेश्वर, २–वैष्णव, ३–ब्रह्म, ४–काशी, ५–रेवा, ६–तापी और ७–प्रभास । इन्हीं सातों का वर्णन हम यहाँ पर संक्षेप रूप से करते हैं ।

१—माहेश्वरखण्ड । (८३ अध्याय)

दक्ष की कथा । सती की कथा । शिवविवाह । शिवमाहात्म्य । शैव धर्म का माहात्म्य । रावण की शिव-पूजा । समुद्रमथन का वर्णन । इन्द्र और बृहस्पति का विरोध । नहुष और ययाति की कथा । वृत्रासुर की कथा । दधीचि की कथा । बलि और वामन-अवतार की कथा । शिवरात्रि-व्रत-माहात्म्य । शिव और पार्वती का जुआ खेलना । शिवजी की हार । हारे हुए

शिव का कौपीन धारण करके कैलास छोड़ कर वन में चला जाना । शवरी-रूप धारण कर पार्वती का शिव के पास जाना । तीर्थों का वर्णन । दान का माहात्म्य । ब्राह्मण-प्रशंसा । ओङ्कार-वर्णन । शिव-भक्ति । हर-पार्वती का विहार । शिव-महिमा । कुमारी-चरित । वासुदेव-माहात्म्य । सोमनाथ की उत्पत्ति । कर्मों के फल । घटोत्कच का विवाह । काली-चरित । गायत्री-माहात्म्य ।

२—वैष्णवखण्ड ।

अयोध्या आदि नगरों का माहात्म्य । चैत्र आदि मासों का माहात्म्य । मार्कण्डेय की कथा । अम्बरीष की कथा । इन्द्रद्युम्न की कथा । विश्वकर्माकृत नरसिंह-प्रसाद । नृसिंह-स्तोत्र । दुर्वासा की कथा । इन्द्रादि अवतार-कथा ।

३—ब्रह्मखण्ड ।

धर्मारण्य की कथा । अप्सरा और यम की बातचीत । हयग्रीव की कथा । देवासुर-युद्ध । राम-चरित । कलि-धर्म-कथन । शैव-मन्त्र का माहात्म्य । कल्माषपाद की कथा । गोकर्ण-माहात्म्य । सत्यरथ राजा की कथा । रुद्राक्ष-माहात्म्य । काश्मीर-राजा की कथा । पुराण की निन्दा-दोष-निरूपण । पुराण के सुनने का फल ।

४—काशीखण्ड ।

विन्ध्याचल का वर्णन । पतिव्रता की कथा । यमलोक का वर्णन । चन्द्र और सूर्यलोक आदि लोकों का वर्णन ।

काशी को प्रशंसा। गङ्गा की महिमा। गङ्गासहस्रनाम। ज्ञानवापी (काशी) का वृत्तान्त। सदाचार-कथन। स्त्रियों के लक्षण। गृहस्थ धर्म का वर्णन। मृत्यु के लक्षण। दिवोदास राजा का प्रताप-वर्णन। काशी का और विशेष वर्णन। विश्वेश्वर की कथा। काशी के और शिवलिङ्गों की कथा। दुर्ग-दैत्य का पराजय। दक्षयज्ञ की कथा। सती-देह-त्याग।

५-रेवाखण्ड।

अवतार-कथा। अनेक तीर्थों का वर्णन। मान्धाता की कथा। कावेरी-माहात्म्य। दुर्वासा-चरित। ओङ्कार की महिमा। धुन्धुमार की कथा। नरक-वर्णन। गोदान-माहात्म्य। शिवलोक का वर्णन। रन्तिदेव राजा की कथा। अनेक तीर्थों की महिमा। रेवाचरित्र की कथा।

६-तापीखण्ड।

तापी के दोनों ओर के देवालयों का वर्णन। शरभङ्ग तीर्थ का वर्णन। हरिहरक्षेत्र और पचासों क्षेत्रों और तीर्थों का माहात्म्य-वर्णन। तापी के सागर-मिलन की कथा।

७-प्रभासखण्ड।*

पुराणों और उपपुराणों के नाम आदि। प्रभास-क्षेत्र की प्रशंसा। सरस्वती नदी की महिमा। पाण्डवेश्वर आदि सैकड़ों तीर्थों और देवालयों का वर्णन। ब्राह्मणों की प्रशंसा। सावित्री-

---

* इस खण्ड में प्रायः तीर्थों और क्षेत्रों का वर्णन है।

माहात्म्य । च्यवन ऋषि की कथा । शिवरात्रि की महिमा । प्रभास-क्षेत्र की यात्रा की महिमा ।

१४—वामनपुराण ।

वामनपुराण चौदहवाँ पुराण है । इसमें कुल ५५ अध्याय * हैं । इसमें वामनावतार की कथा विस्तार से लिखी गई है । संक्षेप-कथा-सूची इस प्रकार है ;—

कथा-सूची

१—१०—पुलस्त्य और नारद का संवाद । हर-पार्वती-संवाद । शंकर की तीर्थयात्रा । सती का देह-त्याग । शिव का कोप । नर-नारायण का उपाख्यान । च्यवन मुनि का पाताल-गमन । नर-नारायण के साथ प्रह्लाद का युद्ध ।

११—२०—सुकेशी राक्षस की कथा । नरक-वर्णन । पुष्कर-द्वीप की कथा । जम्बूद्वीप का वर्णन । सुकेशी को धर्म का उपदेश । रक्तबीज की कथा । विन्ध्याचल में देवी की स्थिति ।

२१—३० शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों का वध । शम्बर के साथ तपती का प्रेम । कुरु-राजा की कथा । पार्वती की तपस्या । शिव-पार्वती-विवाह । गणेश का जन्म । धूमलोचन, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज, शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों का विनाश । महिषासुर का नाश ।

३१—४०—मुर दैत्य की कथा । पुन्नाम नरक का वर्णन ।

---

* श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस के छपे वामनपुराण में ९९ अध्याय हैं ।

नरक और पापों का निर्णय। पुत्र की कथा । मुर दैत्य की मृत्यु। अन्धकासुर और शङ्कर का विवाद । दण्डक राजा की कथा।

४१—५५—अन्धकासुर के साथ शिव का युद्ध। अन्धक-वध। बलि का राज्यग्रहण। देवों के साथ युद्ध । अदिति की तपस्या। वामन-अवतार। बलि का पराजय । बलि का पाताल में गमन। सुदर्शन चक्र की स्तुति । बलि के प्रति प्रह्लाद का धर्मोपदेश। ब्राह्मण-भक्ति। बारह महीनों में विष्णु की पूजा का नियम। वृद्ध पुरुष की प्रशंसा।

१५—कूर्मपुराण।

पुराणों में कूर्मपुराण पन्द्रहवाँ पुराण है। इसके दो भाग हैं—पूर्व और उत्तर। पहले भाग में ५२ और दूसरे में ४४ अध्याय हैं। दोनों में कुल मिलाकर ९६ अध्याय हैं। लिङ्गपुराण में जो पुराणों में श्लोकों की सूची दी है उसके अनुसार कूर्मपुराण की श्लोक-संख्या १७ हज़ार होनी चाहिए। ऐसा ही और और पुराणों में भी लिखा है। परन्तु जो कूर्मपुराण आज कल मिलता है उसमें १७००० क्या ७००० भी श्लोक नहीं मिलते। इससे मालूम होता है कि असली कूर्मपुराण बड़ा है, या इसी में का कुछ हिस्सा कभी जाता रहा होगा। अस्तु, अब प्रचलित कूर्मपुराण की कथाओं की संक्षिप्त सूची सुनिए।

पूर्व भाग

कथा-सूची

१—१०—इन्द्रद्युम्न की कथा । वर्णाश्रमधर्म-निरूपण । संसार की उत्पत्ति ।

११—२०—देवी का अवतार । भृगु और मनु आदि की सृष्टि-रचना । दक्षयज्ञ-विध्वंस की कथा । हिरण्यकशिपु और अन्धक का पराजय । वामनावतार-लीला । सूर्यवंश का वर्णन ।

२१–३०—इक्ष्वाकु-वंश का वर्णन । पुरूरवा और जयद्रथ के वंश की कथा । राम और कृष्ण की कथा । सत्य, त्रेता और और द्वापर तथा कलि के स्वरूप का वर्णन । काशी-माहात्म्य ।

३१–४०—व्यास की तीर्थ-यात्रा का वर्णन । प्रयाग-माहात्म्य । प्रयाग में मरने की महिमा । माघ मास में प्रयाग-स्नान का माहात्म्य । यमुना-माहात्म्य । सातों द्वीपों का वर्णन ।

४१–५२—सूर्य का वर्णन । भूलोक आदि लोकों का वर्णन । सागर और द्वीपों का वर्णन । मेरु पर ब्रह्मपुरी का वर्णन । मन्वन्तरों की कथा । व्यास-कीर्तन और महादेव-अवतार की कथा ।

उत्तर भाग ।

१—१०—ज्ञान की प्रशंसा । ज्ञान-योग । ईश्वर की महिमा ।

११—२०—अष्टाङ्ग योग का वर्णन । ब्रह्मचारी के धर्म । भक्ष्याभक्ष्य का निर्णय । नित्यक्रिया । भोजन-विधि । श्राद्धकल्प ।

२१—३०—श्राद्ध के योग्य ब्राह्मण का विचार । अशौच-प्रकरण । दान-धर्म का वर्णन । वानप्रस्थ, संन्यास के धर्मों का वर्णन । प्रायश्चित्त-कथन ।

३१—४४—अनेक प्रायश्चित्तों और अनेक तीर्थों के माहात्म्यों का वर्णन । प्रलय का वर्णन । कूर्मपुराण की समाप्ति ।

१६—मत्स्यपुराण ।

सोलहवाँ मत्स्यपुराण है । इसमें सब २९१ अध्याय हैं । इसकी मुख्य मुख्य कथाओं का वर्णन इस प्रकार है ।

१—१०—मनु और विष्णु का संवाद । जगत् की सृष्टि । वैश्यचरित ।

११—२०—चन्द्र और सूर्यवंश का वर्णन । पितृवंश का वर्णन । श्राद्ध-विधि ।

२१—३०—ययाति का चरित । कच को संजीवनी विद्या का लाभ । शर्मिष्ठा और देवयानी की कथा । ययाति का आश्रम-धर्म-कथन ।

३१—४०—ययाति और शर्मिष्ठा का मिलाप । ययाति को शुक्र का शाप । पुरु को राजतिलक । ययाति का स्वर्ग-गमन । ययाति के स्वर्ग से गिरने का कारण ।

४१—५०—यदुवंश की कथा । पुरुवंश का वर्णन ।

५१—६०—अग्निवंश की कथा । कृष्णाष्टमीव्रत ।

६१—७०—अगस्त्य की उत्पत्ति। चन्द्र-सूर्य-ग्रहण में स्नान की विधि। अनङ्गदान व्रत।

७१—८०—गुरु और शुक्र की पूजा। कल्याणसप्तमी आदि व्रतों का वर्णन।

८१—९०—गुड़, सुवर्ण, तिल आदि वस्तुओं के पर्वतों के दान की विधि।

९१—१००—नवग्रह का होम और शान्ति। शिवचतुर्दशी-व्रत। विष्णुव्रत।

१०१—११०—प्रयाग का माहात्म्य। प्रयाग को तीर्थ-राजत्व कथन। प्रयाग में सब तीर्थों के रहने का वर्णन।

१११—१२०—प्रयाग-माहात्म्य। भारतवर्ष की प्रशंसा। पुरूरवा के पहले जन्म की कथा। हिमालय का वर्णन। पुरूरवा की तपस्या।

१२१—१३०—जम्बूद्वीप आदि का वर्णन। खगोल-वर्णन। त्रिपुर की कथा।

१३१—१४०—त्रिपुर-दाह की विस्तारपूर्वक कथा।

१४१—१५०—द्वापर और कलि का वर्णन। युगभेद से आयु आदि का वर्णन। धर्मकीर्तन। तारक-वध। कालनेमि दैत्य का पराजय।

१५१—१६०—पार्वती की तपस्या। मदन-दाह। शिव-विवाह।

१६१—१७०—हिरण्यकशिपु के वध-प्रसंग में नरसिंह

भगवान् की उत्पत्ति । हिरण्यकशिपु-वध । मधु-कैटभ-वध की कथा ।

१७१—१८०—ब्राह्मणों की सृष्टि । देव-दानव-युद्ध ।

१८१—१९०—अविमुक्त क्षेत्र की कथा । नर्मदा-माहात्म्य । त्रिपुर-मर्दन । कावेरी-माहात्म्य ।

१९१—२१०—भृगु और अङ्गिरा के वंश का वर्णन । अत्रि, विश्वामित्र, कश्यप वशिष्ठ, पराशर, अगस्त्य, और धर्म के वंशों का वर्णन । सावित्री की कथा । यम और सावित्री का संवाद ।

२११—२२०—यम से सावित्री को वर-लाभ । राज-नीति का वर्णन । राजरक्षा का कथन । राजोपयोगी कथा ।

२२१—२२३—दान-प्रशंसा । दण्ड-प्रशंसा ।

२३१—२४०—अग्नि, वृक्ष और वायु के उत्पातों का वर्णन । अङ्गस्फुरण का फल । स्वप्नों के फल ।

२४१—२५०—वामनावतार-कथा । समुद्र-मथन ।

२५१—२६०—पूजन करने योग्य प्रतिमा का परिमाण ।

२६१—२७०—देवालय की प्रतिष्ठा की विधि ।

२७१—२८०—मगध देश में भविष्य राजाओं की कथा । पुलकवंशी राजाओं का वर्णन । अन्ध्र, यवन और म्लेच्छगण के राज्य का वर्णन । दानों के फल ।

२८१—२९१—विविध दानों का फल और विधि । मत्स्यपुराण में वर्णित तीर्थ और फल ।

१७—गरुड़पुराण ।

गरुड़पुराण बड़ा प्रसिद्ध पुराण है। इस में दो खण्ड हैं। पूर्व और उत्तर। दोनों में कुल २८८ अध्याय हैं। पहले में २४३ और दूसरे में ४५। इसमें कुल १८ हज़ार श्लोक हैं। यह श्लोक-संख्या मत्स्यपुराण के मत से है।

कथा-सूची ।

पूर्व खण्ड

१—१०—सृष्टि-रचना। विष्णु और लक्ष्मी की पूजा-विधि।

११—३०—विष्णुसहस्र-नाम। सूर्य-पूजा। सर्प-मन्त्र। शिव-पूजा। विष-हरण। श्रीधर-पूजाविधि।

३१—५०—गायत्री के न्यास आदि का वर्णन। गायत्री-माहात्म्य। दुर्गापूजा। देवप्रतिष्ठा का वर्णन।

५१—७०—दानधर्म। प्रियव्रत-वंशवर्णन। भारतवर्ष का वर्णन। पाताल और नरकों का वर्णन। ज्योतिःसम्बन्धी बातें। स्त्रियों के शुभ और अशुभ लक्षण। रत्नों और मोतियों की पहचान।

७१—९०—विविध रत्न-मणियों की पहचान। गया-तीर्थ का विस्तारपूर्वक माहात्म्य। १४ मनुपुत्रों का वर्णन।

९१—१००—हरिध्यान। यज्ञोपवीत का वर्णन। गृह-धर्म-वर्णन। सन्ध्या और पञ्चमहायज्ञों का वर्णन। दानधर्म, श्राद्ध-विधि।

१०१—१२८—ग्रह-शान्ति। वानप्रस्थ और संन्यासी के

धर्मों का वर्णन । प्रायश्चित्त-विधान । नीतिसार । अनेक व्रतों का वर्णन ।

१२१—१४०—शिवरात्रि और एकादशी आदि व्रतों का वर्णन ।

१४१—१८०—सूर्य, चन्द्र और पुरुवंश का वर्णन । जनमेजय के वंश का वर्णन । पतिव्रता-माहात्म्य । रामायण की कथा । हरिवंश-वर्णन । भारत की कथा । आयुर्वेद कथन में सर्वरोग-निदान और औषध ।

१८१—१९९—भिन्न भिन्न रोगों की औषध । पशुओं की चिकित्सा ।

२००—२३०—विष्णु-कवच । अश्व-चिकित्सा । छन्दः-शास्त्र । धर्मोपदेश, स्नान, तर्पण, वैश्वदेव, सन्ध्या, श्राद्ध, नित्यश्राद्ध, आदि नित्य कर्मों का वर्णन । युगों के अलग अलग धर्म । प्रलय का वर्णन । पापों का फल । आठ प्रकार के योग का वर्णन ।

२३१—२४३—विष्णुभक्ति । हरि-ध्यान । विष्णु का माहात्म्य । नृसिंह-स्तुति । ज्ञानामृत का वर्णन । ब्रह्मज्ञान का वर्णन । आत्मज्ञान का कथन । गीतासार । योग का प्रयोजन ।

उत्तरखण्ड ।

१—२०—गरुड़ और विष्णु का प्रश्नोत्तर । मरणोत्तर गति का वर्णन । नरकों का वर्णन । शव-दाह-विधि । बभ्रु-वाहन और प्रेत का संवाद । मनुष्य-जन्म-लाभ की महिमा । प्रेत-योनि छुड़ाने का उपाय । यमलोक का मार्ग । चित्रगुप्त-नगर में जाने का वर्णन । प्रेतों के रहने की जगह ।

३१—४०—मनुष्यों की आयु का निर्णय। बालमृत्यु का कर्मनिर्णय। दान-माहात्म्य। जीव की उत्पत्ति। साँड़ के छोड़ने का फल और विधि।

४१—४५—पहले जन्मों के कर्मों का सम्बन्ध-वर्णन। आत्महत्यारे के श्राद्ध करने का निषेध। वार्षिक श्राद्ध। पापानुसार जन्म आदि का वर्णन। गरुड़पुराण के पढ़ने और सुनने का फल।

१८—ब्रह्माण्डपुराण।

सत्रह पुराणों का संक्षिप्त वर्णन हो चुका। अब अठारहवें ब्रह्माण्डपुराण का भी वर्णन सुनिए। इस पुराण में कुल १४२ अध्याय हैं। इसके भी दो भाग हैं। पहले भाग का नाम प्रक्रियापाद है और दूसरे का उपोद्घातपाद। पहले पाद में ८० और दूसरे में ६२ अध्याय हैं। ब्रह्मवैवर्त-पुराण के मत से ब्रह्माण्डपुराण के श्लोकों की संख्या १२ हज़ार है। इसमें किसी ख़ास देवता का मुख्यतया वर्णन नहीं किया गया है। अनेक देवों की अनेक कथायें इसमें लिखी हैं। सारे ब्रह्माण्ड का पूरा पूरा वर्णन इसमें किया गया है। इसीलिए इसे 'ब्रह्माण्डपुराण' कहते हैं। इसकी संक्षिप्त कथासूची इस प्रकार है:—

कथा-सूची।

प्रक्रियापाद

१—३०—सृष्टि-वर्णन। देवों और असुरों की उत्पत्ति। योगधर्म। ओङ्कार की महिमा। कल्प-संख्या। ब्रह्म की उत्पत्ति। लोकपाल आदि की उत्पत्ति। ज्वर का वर्णन। देव-वंश-कीर्तन।

३१—६०—भरत-वंश-वर्णन। जम्बूद्वीप का वर्णन। पर्वतों और नदियों का वर्णन। भारतवर्ष का वर्णन। द्वीप-द्वीपान्तरों का वर्णन। नीचे और ऊपर के लोकों का वर्णन। चन्द्र, सूर्य और ग्रह-नक्षत्र आदि का वर्णन।

६१—८०—पितरों का वर्णन। पर्वों का निर्णय। युगों का कथन। कलियुग का विशेष वर्णन। धर्म-अधर्म-निरूपण। वेदों के विभाग करने का वर्णन। संहिताकार ऋषिवंश का वर्णन। मन्वन्तरों का वर्णन। पृथु के वंश की कथा।

उपोद्घात-पाद।

१—३०—श्राद्ध का वर्णन। वरुण, इक्ष्वाकु और मिथिला के वंशों का वर्णन। राजयुद्ध। परशुराम-चरित।

३१—६२—भविष्य-कथा। वैवस्वत मनु का वंश। चन्द्रवंश का वर्णन। विष्णुवंश-कथन। भविष्य राजवंश का वर्णन। भविष्य मनुओं का वर्णन। चौदह लोकों और नरकों का वर्णन। गुणानुसार प्राणियों की गति। प्रलय और फिर संसार की रचना का वर्णन।

समाप्त